SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

MARCH '06

શ્રી નરનારાયણદેવનો ૧૮૪મો પાટોત્સવ



Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



श्री नरनारायणदेव के १८४ वें पाटोत्सव प्रसंग पर अहमदाबाद के प्रसादी के सभा मंडप में श्रीहरि के अपर स्वस्मों का दर्शन ।



श्री नरनारायणदेव के १८४ वें पाटोत्सव प्रसंग पर यज्ञ में श्रीफल का हवन करते हुए पू. महंत स्वामी के साथ पाटोत्सव के यजमान परिवार ।



अपने शिकागो मंदिर में दर्शन देते हुए श्री राधाकृष्णदेव श्री हरिकृष्ण महाराज ।



अहमदाबाट वासणा विस्तार में श्रीमद् भागवत पारायण प्रसंग पर दीप प्रगट करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा लाभ लेते हुए यजमान परिवार श्री प्रकाशभाई भलाभाई, औडा के भू.पू. चेरमेन श्री सुरेन्द्रभाई तथा चि. दर्श वगैरह ।



धरियावद (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रथम पाटोत्सव के प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



गामडी गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ मार्च -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	कथावार्ता	४
४.	श्रीहरिचरित्रामृत सागर में श्री नरनारायणदेव	७
५.	होलिकोत्सव	१०
६.	सत्संग सुरभि : आज्ञा में रहने का प्रताप है	११
७.	श्रीहरि द्वारा माया ममता को दूर करने की उपाय	१३
८.	सत्संग बालवाटिका	१४
	(१) माफ करे वह बड़ा	
	(२) यात्रा करे लेकिन स्वभाव नहीं छूटे	
९.	प्रश्नपेटी	१७
१०.	भक्तिसुधा	१८
	(१) महाराज से बडा कोई नहीं	
	(२) डांगरवा की जतन बा	
	(३) स्त्रियों की सभा में भक्तिमाता का दर्शन	
११.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सर्वावतारी भगवान श्रीहरि नीलकंठवर्णी के स्म में समग्र भारत वर्षकी तीर्थयात्रा करने के लिये महाभिनिष्क्रमण किये उस समय से ही तपकरना प्रारंभ कर दिये थे । कभी उन्हें अच्छा भोजन मिले तो उसे भी स्वीकार नहीं किया । क्योंकि भोजन तथा भजन में मेल नहीं है । अच्छा भोजन करने से अधिकनिद्रा आती है जब निद्रा आयेगी तो भजन नहीं होगी । भजन के विना मोक्ष संभव नहीं है । इसलिये मोक्ष की इच्छा वाले को चाहिए कि इन्द्रियों को पोषण देने वाले आहार का त्याग करके तप करना ही श्रेष्ठ हैं । इन्द्रियों को वश में किये विना परमेश्वर के स्वस्म को प्राप्त करना अति कठिन है । केवल शुकवत् ज्ञान जैसा वैराग्य तथा त्याग की केवल वात करने से ही परमेश्वर की प्राप्ति नहीं होती । इसके लिए जीवन में थोडा भी तो आचरण होना आवश्यक है । केवल परोपदेशे पांडित्यम् से काम नहीं होता । जगत में मान, वडप्पन यश ये सभी उपयोगी दिखाई देते हैं । त्याग, वैराग्य तथा शिक्षा के नाम लोगों को वर्गला कर मोक्षमार्ग से विमुख करने का ढोंग कितने ही कषाय वस्त्र धारण करने वाले सरलता से अपनी मनमानी करवाकर युगधर्मानुसार सफलता प्राप्त करलेतें हैं । तब मोक्षभागी जीवात्मा के लिए शीक्षापत्री की आज्ञा में रहना बहुत जरुरी एवं आवश्यक हो गया है । ऐसे मार्ग पर चलने वाले केवल अपनी इच्छा की पूर्ति ही देखपाते हैं, यद्यपि उनके लिए ज्ञान, त्याग, वैराग्य से कोई मतलब ही नहीं होता है । त्याग, वैराग्य, भक्ति तथा ज्ञान तो श्रीजी महाराज के अभिप्राय के अनुसार जिसके ऊपर भगवान श्री नरनारायणदेव की कृपा हो तो वही जीव मोक्षभागी होता है । अन्यथा केवल व्यावहारिक ही इस जगत में दिखाई देता है । जिससे सभी लोग सावधानी पूर्वक अपने चित्त को परमात्मा में लगाते रहें इसी में सभी का हित है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

फरवरी-२००६

१. प.भ. मनसुखभाई परसोत्तमभाई सुहागिया के यहाँ पदार्पण बापुनगर।
प.भ. अरविंदभाई छगनभाई मांगुकिया के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।
२. मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी के उत्सव तथा रंगोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
४. जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर शाकोत्सव में पदार्पण।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
प.भ. दिनेशभाई बाबुभाई सोनी कांकरिया चांदला प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण।
प.भ. परेशभाई बाबूलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, थलतेज।
६. सरसपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
प.भ. सी. के. पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, शाहीबाग।
प.भ. कनुभाई बलवंतराय पटेल के यहाँ पदार्पण, सरसपुर।
७. नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
८-९. धरियावद (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण .
१०. मोखासण गाँव में प.भ. कांतिभाई करशनदास पटेल द्वारा आयोजित पारायण तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
प.भ. रमणभाई ईश्वरदास पटेल के यहाँ पदार्पण।
कलोल श्रीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
कडी गाँव में प.भ. गोविन्दभाई हीराभाई पटेल तथा प.भ. विनोदभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।
११. सोजा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शतवार्षिक पाटोत्सव पारायण, श्री हनुमानजी के मंदिरकी प्राण प्रतिष्ठा पर पदार्पण।
प.भ. प्रकाशभाई भलाभाई द्वारा आयोजित पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण, वासणा बेरेज रोड।
१२. प.भ. नारायण लक्ष्मीप्रसाद जोषी के यहाँ पदार्पण, आंबावाडी।
१३. प.भ. हसमुखभाई मकवाणा के यहाँ पदार्पण, रायपुर।
प.भ. जिगरभाई दीपकभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, कांकरिया।
प.भ. घनश्यामभाई रणछोडभाई पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण।
प.भ. महेन्द्रभाई गोविन्दलाल पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण।
१४. साचोदर (ईडर देश) गाँव में प.भ. माधाभाई करशनभाई पटेल के यहाँ पारायण की पूर्णाहुति पर पदार्पण।
१५. बापुपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
१६. इटादरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.भ. नटवरलाल जोईताराम पटेल द्वारा आयोजित पारायण में पदार्पण।
१७. लुणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव में पदार्पण।
१८. नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव में पदार्पण। प.भ. रमेशभाई रणछोडभाई मारफतिया के यहाँ कीर्तन भजन प्रसंग पर पदार्पण, मीठाखडी। प.भ. नटवरभाई टी. पटेल के यहाँ पदार्पण, घाटलोडीया।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट विदुरनीति पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण। रणछोडपुरा गाँव में राजूभाई के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण। प.. अभिषेक प्रभुदास कचराभाई पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर पदार्पण, राणीप।
प.भ. दशरथभाई कानजीभाई पटेल के यहाँ विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, साबरमती।
२०. भक्तिनगर (मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा में पदार्पण।
२१. प.भ. कौशिकभाई वजुभाई पाटलिया के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा।
२२. शहेर (पंचमहाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२३. कुबडथल श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२४. प.भ. विरेशभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप।
२५. जूरावास इडरदेश श्री स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती अवशर पर पदार्पण।
२७. सिद्धपुर नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत निवास के खातपूजा प्रसंग पर पदार्पण।
२८. कलोली (जेतलपुर देश) गाँव में पदार्पण। रात्रि में चराडवा मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

।। कथावार्ता ।।

- साधु घनश्यामप्रकाशदास (महंतश्री नारायणघाट)

शब्दे मार्या मरीया,
शब्दे छोड्या राज ।
जेणे शब्द विचारिया,
एना सरिया काज ।।

दुनियां में शब्द जितना कोई बलवान नहीं है । अनेक शब्दों का समूह अर्थात् कहानी । बालक जब से जन्मता है तब से उसे कहानी सुनाई जाती है । कहानी अनेक प्रकार की होती है । भगवान एवं भक्त से सम्बन्धित हो तो उसे कथा कहते हैं । कथा का उल्टा थाक होता है । इसलिये बडे संत कहते है कि थाक उतारने का काम कथा का है । शब्द दो प्रकार का काम करता है, मारने का एवं तारने का ।

सरदार वल्लभभाई एक केस लड रहे थे । साक्षी यदि कोर्ट में हाजिर हो जाता तो केश हार जाने की स्थिति थी । उन्होंने साक्षी के चार मित्रों को खड़ा किया तुमचारो क्रम से थोडे-थोडे समय पर जाओ और कहो कि तुमको बुखार आया है । इस प्रकार सभी उसके घर गये और कहने लगे अरे भाई ? तुम्हारी शरीर पीली हो गयी है स्वास्थ्य ठीक नहीं है । दूसरा आया अरे भाई तुम्हे तो बुखार आ गया है । उस मित्र को इन सभी की बात असर करने लगी । इसी प्रकार तीसरे चौथे ने भी आकर कहा कि तुम्हारी तो एकदम तबियत कैसी हो गयी है । यह सब सुनकर उसकी तबियत बिगडने जैसी होने लगी और वह कोर्ट में जा नहीं सका, परिणामतः सरदार वल्लभभाई अपना केस जीत गये । शब्द मनमें त्वरित असर करता है । शरीर में वैसा ही प्रवर्तित होता है ।

राजा गोपीचन्द को उनकी माता ने ही वैराग्य कराकर जंगल में तप करने के लिए भेंजा था । गोपीचंद राजा स्नान कर रहे थे दासियाँ उन्हे स्नान करा रहीं थीं । माता ने यह देखा । आंख में से आंसू नीचे गिरा । यह आंसू थोड़ा गरम लगा । ऊपर देखा और माता के पास गये । माता ने कहा तुम्हारे पिता भी ऐसे सुन्दर स्वस्थवान थे । गोपीचंद ने पूछा अविचल रहने का क्या साधन ? तब माता ने कहा "भगवान की भजन" अब वे राजपाट छोड़कर निकल गये । शब्द इतना बलवान होता है ।

ध्रुवजी को भी एक ही शब्द अविचल ध्रुवका तारा पद प्राप्त करा दिया । ध्रुवजी को दूसरी मांने कहा कि यदि तुम्हे राजा की गोंद में बैठना था तो मेरी कोख से पैदा होना चाहिए था । वस ध्रुवजी जंगल में तप करने निकल दिये और छ महीने में प्रभु का दर्शन कर सके । वालिया भी नारदजी की बात सुनकर वाल्मीकि ऋषि हो गये । इस वात को कौन नहीं जानता ।

तुलसीदास भी पत्नी के पीछे पागल थे । रात्रि के अन्धकार में वरसते वरसात में लाश पर बैठकर तैरते हुए पत्नी से मिलने की उतावल में सांप को रस्सी मानकर घर में चढकर गये थे । उस समय उनकी पत्नी ने कहा -

जैसी प्रीति हराम से वैसी हरि से होय ।
चलाजाय वैकुंठ में पल्ला न पकडे कोई ।।

वस इतना सुनते ही तुलसीदास महान संत बन गये । इसलिए उत्तम शब्द मानव को बदल देते है । भगवान स्वामिनारायण के पांचसौ परमहंस थे । उनमें एक संत गुणातीतानंद स्वामी कहते थे कि वचनामृत के अलांवा यदि कहीं माल दिखाई दे तो वह है मोह ।

भगवान स्वामिनारायण की परावाणी स्म वचनामृत गढडा अन्त्य प्रकरण २४ वें में श्रीजी महाराज ने कृपा करके ऐसी वात कहा कि जिस मुमुक्षु को उत्कृष्ठ गुण की प्राप्ति करनी हो तो उसे क्या करना चाहिए ?

तो भगवान की कथा वार्ता में जितनी प्रीति होगी उतना ही जगत का अभाव आयेगा । इसी प्रकार काम क्रोध लोभादिक का नाश होगा । यदि ऐसा नहीं होगा तो आलस्य के कारण उसमेंगुण नहीं आयेगा । भगवान के प्रति जिसकी जितनी प्रीति होगी उतना जगत के प्रति अभाव आयेगा ।

वचनामृत गढडा प्रथम के ५९ वे में कहते हैं कि प्रलंबासुर बलराम जी को लेकर चला, बल रामजी को अपने बल का ख्याल नहीं था आकाश वाणी हुई तब उन्हे अपनी शक्ति का स्मरण हुआ और प्रलम्बासुर का बन्ध किये ।

वचनामृत गढडा मध्य प्रकरण के ३५ वें में श्रीजी महाराज कथा की महिमा समझाते हुए कहते हैं कि हमने स्वस्मानंद स्वामी को अपने स्वस्म के विषय में बताया और वे उसे अपने हृदय में धारण किये परिणामत: उन के शरीर में जो पीडा थी वह दूर हो गयी ।

पृथुराजा को भगवान की असाधारण भक्ति थी जिससे भगवान प्रसन्न होकर उन्हे वरदान मांगने को कहे तो वे दश हजार कान मांगे, दूसरा कुछ नहीं, जिससे भगवान की कथा सुन सकें ।

वचनामृत कारियाणी १२ वें में श्रीजी महाराजने कहा कि जीव की माया वज्र के समान है । जो जीव से कभी अलग नहीं होती है । जब संत समागम होता है तो धीरे धीरे बन्धन माया का टूटने लगता है । जैसे इमली का फल कितना कठिन होता है लेकिन उसकी दृढता अग्नि पर रखते ही मुलायम हो जाती है जब उसे हाथ में लें तो छाल अलग हो जायेगी । चाहे कितने भी कामादिक शत्रु दृढ हों लेकिन भगवान की कथा वार्ता सुने तो मन निर्विषयिक हो जाता है । इसलिए भगवान में दृड प्रीति-भक्ति-विश्वास रखकर भगवान पुरुषोत्तम नारायण में मन लगाने से दृढ हो जाता है ।

महान संत सद्गुरु श्री गोपालानंद स्वामी के हाथ में श्रीजी महाराज ने दोनों आचार्यों के हाथ को सौंपा था । सदाशिवभाई तीन मंजिल की हवेली बनाकर वास्तु विधि के लिये गोपालानंद स्वामी को आमंत्रण देने गये तो स्वामी ने उन्हे रोक लिया और कहा कि हम दश दिन के वाद साथ में चलेंगे । शेठ स्वामी की आज्ञा मानकर रुक गये । स्वामी उन्हे रोज कथा वार्ता सुनाते । संयोग वश एक दिन शेठ के ऊपर पत्र आया कि शेठजी आप की हवेली जलकर राख हो गयी है । तब सदाशिव स्वामी के पास जाकर कहने लगे कि स्वामी आपने हमारे ऊपर बड़ा उपकार किया कि यहाँ रोक कर कथा वार्ता सुनाये, अन्यथा हवेली की मोह के साथ हमभी जल गये होते । कथावार्ता जीवन को शुद्ध करने का एक साधन है । जैसे युद्ध में रणशिंगा बजता है और सभी चाहे कायर क्यों नहों वे युद्ध के लिये तैयार हो जाते है, ठीक यही स्थिति कथावार्ता की है कायर को सिंह वनाती है ।

स.गु. गुणातीतानंद स्वामी ने श्रीजी महाराज को चार प्रश्न पूछे - कि मुझे आत्मस्म में रहना (१) रोगी की सेवा करना (२) वार्ता करना (३) अखंड ध्यान करना ? (४) तब श्रीजी महाराजने उन्हे कहा कि सदा संत हरिभक्तों के साथ कथा वार्ता करना - सुनना ।

एक दिन गोपालानंद स्वामी गढडा म. ९ वे वचनामृत को समझा रहे थे तब श्रीजी महाराज के दाहिने अंग के समान शुकानन्द स्वामीने कहा आजतक यह वचनामृत समझ में नहीं आया था लेकिन आज स्पष्ट हो गया ।

द्वितीय के ४८ वें वचनामृत में गुणातीतानंद स्वामी ने कहा साधु की वात अधिक कड़वी होती है जोतीर की तरह आरपार कर जाती है । जो ऐसे संतो के वचन में विश्वास प्रेम रखे उसका कल्याण होजाता है । भगवान की कथा कैसी है जैसे कोई चौकीदारी करने वाला सभी को जागते रहो ऐसा कहता है और सभी का भय चला जाता है । ऐसी कथा होती है ।

वचनामृत का अर्थ सरलता से नहीं समझाजा सकता है लेकिन अभ्यास से सरल हो जाता है ऐसा महाराज का वर है । (स्वामी की वातों)

एकवार गोपालानंद स्वामी के पास एक हरिभक्त आया और कहा मेरी बकरी मर गयी है ऐसा कहकर रोने लगा । तब गोपालानंद स्वामी भी रोने लगे थे । हरिभक्त ने पूछा स्वामी मेरी बकरी मर गयी इसलिए रोता हूँ, आप क्यों रो रहे हैं । तब स्वामीने कहा आजतक मेरी कथा

सुनने के बाद भी मेरी सुनी कथा को पानी में डाल दिया इसलिये मैं रोने लगा ।

हम नित्य आरती में ब्रह्मानंद स्वामी का पद बोलते हैं -

संत समागम कीजे हो निसदिन
संत समागम कीजो ।
महान संत के मुख से, प्रेम सुधा
रस पीजो हो ॥

श्रीजी महाराज को कथावार्ता इतनी अच्छी लगती थी कि इसका वर्णन करते हुए प्रेमानन्द स्वामीने नित्य चेष्टा में लिखा है -

कथा सांभडता हरेहरे बोले,
मर्म कर्था रे सुखी मगन थई डोले ।
हार चडावे रे पूजा करवा आवे,
तेना ऊपर रे बहु खीजी रीसावे
निष्कुलानंद स्वामी पण कहे छे
वात हेत नी हैये धारजो रे

एक दूसरे पद में भी निष्कुलानंद स्वामी कहते है -

मानो मणी दे मोटी तात, हाथ
आवी तेमा हारजो रे
करी जतन दिवस रात सूता-बैठा
संभारजो रे.....

(स्वामी की बात)

गुणातीतानंद स्वामी ने भी एक वात कही कि करोडो काम छोड़कर एक मोक्ष को सुधार लेना चाहिए । अन्यथा चौरासी लाख योनियों में जन्म मरण का चक्कर लगा ही रहेगा।

चैतन्यानंद स्वामी पाट विना का पदार्थ रखते लेकिन गोपालानंद स्वामी त्याग की वात करके सभी को त्यागी बनाते । श्रीजी महाराज बडोदरा में आये उस समय सयाजीराव खूब बड़ा उत्सव किये । उस समय दर्शन के लिए एक वणिक स्त्री आकर देखी तो संत लोग कीर्तन गा रहे थे ।

रे सगपण हरि वरनुं साचुं .....

यद कीर्तन उस स्त्री को याद रह गया, जिससे वह कामकाज करते हुए भी कीर्तन बोलती रहती थी । परिणाम स्वरूप उसकी जब मृत्यु आयी तब वही कीर्तन चल रहा था और भगवान लेने आये, तब महिला ने कहा हम आपकी भक्ता तो नहीं है फिर आप क्यों लेने आये ? ..... तब प्रभुने कहा

"रे सगपण हरिवरनुं साचुं" इस कीर्तन को तू गाती रही और सगपण हो गया अब मै तुम्हें लेने आया हूँ । नाजा जोगिया महाराज के साथ जब घूमने जाता तब घोडा विना नहीं चलता था । पोषाक भी उत्तम रखता लेकिन कथा सुनने का प्रभाव कि वह साधु हो गया । नाम घनश्यामदास हुआ । जूनागढ में रहते थे ।

आत्मानंद स्वामी तथा भयात्मानंद स्वामी को ११६ वर्ष के बाद भी नये दांत निकले थे । उस समय गुणातीतानंद स्वामीने कहा स्वामी आपको महाराज क्यों लेने नहीं आते हैं । स्वामीने भी कहा हम भी यही विचार करते हैं । तब ग.म. ९वां वचनामृत में कहा है कि आपका धर्म नियम बड़ा कठिन है । लेकिन महाराज के स्वरूप को समझने में कमी है । इसलिए महाराज सर्व अवतारों के अवतारी हैं । ऐसा जानना । बाद में महाराज धाम में ले गये ।

शिक्षापत्री में भी महाराज ने कहा कि हमारे आश्रित साधु संत का समागम अवश्य करें । तब किसी हरिभक्त ने कहा कि सत्संग की मर्यादा में रहकर १० वा २०वां हिंस्सा दान करते हैं और मंदिर, मूर्ति, आचार्य, साधु आदिक की यथाशक्ति सेवा करते हैं तो भी साधु समागम करने को कहते है, इसका क्या कारण है ? तब स्वामीने कहा कि जो आप ने धर्मपालन किया हो लेकिन अशुभ काल का योग होने पर धर्म में कमी आजायेगी । पूर्व में ब्रह्मा, शिव, वृहस्पति, नारद, भरतजी, इत्यादि देशकाल का संगत होने से दोष में आये लेकिन साधु समागम में ब्रह्म चर्य, अहिंसा, सदाचार, दृढबल का सहारा लेकर निर्दोष हो गये । श्रीजी महाराज भी अंत समय में धाममें जाने से पहले आठमहीने तक कथावार्ता का ज्ञान देते रहे ।

धरियावद (राज.) के मंदिर का बदला हुआ फोन नंबर : (०२९५०) २७०६०९

नाथद्वारा मंदिर का नया फोन नंबर (०२९५३) ५१२३६३

श्रीहरिचरित्रामृत सागर में श्री नरनारायणदेव

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

महामुनि श्री आधारानन्द स्वामी कृत श्रीहरि चरित्रामृत सागर ग्रन्थ आधारित जून, २००४ के श्री स्वामिनारायण मासिक अंक में "भगवान श्री स्वामिनारायण तथा श्री नरनारायणदेव का अद्‌भुत मिलन" इस नाम का एकलेख प्रकाशित हुआ था । अर्थात् उस लेख का पुनरावर्तन न हो उसके सिवाय उससे कुछ अधिक ज्ञान प्राप्त हो इस हेतु से यह प्रयास किया गया हैं । जहाँ से श्री स्वामिनारायण मासिक प्रकाशित होता है उस कालूपुर अहमदाबाद मंदिर में अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण स्वनिर्मित मंदिर में श्री नरनारायणदेव के स्वरूप में दर्शन दे रहे हैं। अपने श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को "श्री नरनारायणदेव" नाम की पुस्तक इतनी अधिक प्रिय है कि जब से अर्थात् ता. ६-१-१९९९ से पुस्तक का प्रकाशन हुआ है, तब से आज तक प.पू. आचार्य महाराजश्री जहाँ जहाँ हरिभक्तों के घर पदार्पण करते हैं वहाँ प्रसन्नार्थ महाराज की मूर्ति के साथ "श्री नरनारायण देव" की पुस्तक भेंट में देते हैं । प.पू. आचार्य महाराजश्री का एक ही लक्ष्य होता है कि मुमुक्षु या सत्संगी सभी को श्रीजी महाराज के स्वरूप में विद्यमान श्री नरनारायणदेव की सच्ची पहचान हो सके ।

"सत्संग की माँ" मुक्तानंद स्वामी जहाँ श्री नरनारायणदेव ऋषि के रूप में बदरिकाश्रम में रहे है, उस बदरिकाश्रम का वर्णन करते हुए कहते हैं -

आश्रम मध्य ऊंची धणी,
बदरी विशाल नाम ।
हरि सेवा हित तरु थयु,
एछे केवल अक्षरधाम ॥
दर्शने दुष्कृत टले,
स्परशेजले महापाप ।
मुक्तानंद कहे विशाला नो,
एवो प्रबल प्रताप ॥

विशाल वैर जिसका विशाला ऐसा नाम है । जो प्राकृत वैर का वृक्ष नहीं है । परंतु दिव्य अक्षरधाम श्री नरनारायणदेव स्वरूप में श्रीहरि की सेवा के लिये दिव्य वृक्ष के रूप में प्रगट हुये है । जितनी महिमा बदरिकाश्रम की है उतनी ही महिमा कालुपुर मंदिर की है । कारण यह कि हिमालय की विकट यात्रा सभी लोग नहीं कर सकते इसलिए श्रीहरिने सम्प्रदाय का सर्वप्रथम अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव को अपनी बाहों में भरकर (भेंट कर) प्रतिष्ठित किया हैं । सद् वैराग्य मूर्ति श्री निष्कुलानंद स्वामीने श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने वाले को बडभागी बताया है ।

अब श्रीहरिचरित्रामृत सागर ग्रन्थ में महामुक्त श्री आधारानंद स्वामी के शब्दों पर आजांय ।

हिमालय पर्वत में जो बदरीवन है उसकी सेवा ब्रह्मा-शंकर आदि देव करते हैं । वहाँ रहने वाले पशुपक्षी भी अपने वैर त्याग करके साथ रहते हैं । वहाँ वन में एक दिव्य बदरीवृक्ष है वह इच्छित फल देनेवाला है । उस वृक्ष के नीचे नरनारायणदेव सदा विराजमान रहते हैं । जिसका पार वेद भी नहीं पा सकते हैं । विशाला क्षेत्र जो अलौकिक है, अक्षरधाम तुल्य है । मरीचि महामुनि, शुकमुनि, गर्ग, गौतम आदि मुनि जब इस वदरिकाश्रम में आये तब उन मुनियों द्वारा नर भगवान के प्रति उच्चारण किये गये शब्द "आप तो समग्र ब्रह्मांड के अधिपति हैं तथा नारायण भगवान के अपार प्रिय हैं । नारायण की अहर्निश सेवा करते है । आप में तथा नारायण में कोई फर्क नहीं है । एक होते हुए भी दो रूप में दिखाई देते है । आपके चरण स्पर्श से यह भूमि अधिक भाग्यवाली है ।

उनमुनियों को नारायण भगवान का दर्शन करना था । उसी समय नारायण भगवान भी कुटी में से बाहर आये । उग्र तप के कारण अपार तेजोमय कांति फैल रही थी । कमल के समान नेत्र, पूर्ण चन्द्र समान मन्द मन्द मुस्कान सुशोभित हो रहा था । चरण में सोलह चिन्ह है । मस्तक पर जटारूप मुकुट शोभता था । पीताम्बर से अलंकृत थे । उत्तम विशाल वक्षः स्थल था । प्रत्येक अंग सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार सुशोभित हो रहा था । बायें हाथ में कमन्डलु, दाहिने हाथ में दंड शोभता था । श्वेत वस्त्र धारण किये हुए थे, साथ में उद्धवजी थे ।

उन नारायण मुनि को देखकर मुनियों ने स्तुति की । मुनियों नें चरण स्पर्श किया और हाथ जोड़कर बैठ गये । हाथ जोडकर स्तुति करते हुए कहने लगे कि हे भगवन् ? इन तीनो लोकों में आपका ही यश फैला हुआ है । सम्पूर्ण ब्रह्मांड के आप ही नियंता है । संत पुरुषो को आनंद देने वाले आप ही हैं । धर्म भक्ति के आप पुत्र हैं । अन्तःशत्रु जिसके नाम मात्र से कांपने लगते हैं । ऐसे आपकी जयजयकार हो।

नरनारायण भगवान के निष्कामी

भाव का वर्णन करें तो भगवान की कृपा से शिवजी अति निष्कामी है। माता सती को साथ में लेकर नग्नावस्था में सभा में बैठते है जिसे शुक सनकादि देखकर अपनी हार मानकर सामर्थ्य की प्रशंसा करते हैं। नरनारायणदेव तो इससे भी अति समर्थ हैं। शंभु को सामर्थ्य देने वाले भी स्वयं हैं। भगवान शिव श्रीहरि को मोहिनी स्वरूप बनाने के लिए विन्ती किये थे। नरनारायणदेव ही श्रीहरि हैं जो निष्कामी भाव में रहकर जगत को मुग्ध करते रहते हैं मोहिनी का स्वरूप तो महाप्रभु में ही है। इस स्वरूप को देखने के बाद मुग्ध हुए विना कोई रह ही नहीं सकता। इसीलिए सारा जगत आप को ही प्रणाम कर रहा है।

श्रीहरि कहते हैं कि निष्काम व्रत जितना जिसमें हो उतना ही उसमें नरनारायणदेव का वास रहता है। वसंत भी सदा वहीं रहती है। यश, नीति भी वहीं रहती है। फूलदोलोत्सव ही श्री नरनारायणदेव का जन्म दिन है। उन्हीं को प्रसन्न करने के लिये लोग रंग उड़ाकर उत्सव मनाते हैं। हम भी संतो के साथ वर्षो से रंग क्रीडा करते हैं। निष्काम धर्म की स्थापना करने के लिये भगवान नरनारायणदेव अवतरित हुए हैं। इनका जहाँ निवास होगा उस देश की धन्य भाग्य होगी। जिन्हे निष्काम भाव नहीं होगा वे इन देव के प्रति धिक्कारभाव रखेंगे।

बदरीपति नारायण के अवतार में नर भगवान भागवत पुरुष के स्वरूप में हैं। जूनागढ से श्रीहरि का दर्शन करने के लिए नारायणजी सुथार आये। श्रीहरिने उन्हे मूर्ति की छाप करने के लिए रोका नरनारायण भगवान बदरिकाश्रम में ऋषि के स्वरूप में रहकर ध्यान करतें हैं उस में नर मूर्ति गौरवर्ग है, पीलीजटा है। नारायणमूर्ति अतसी के फूल की तरह श्याम है। तेज से दोनो मूर्ति नखशिख परिपूर्ण हैं। कनक समान जटा नारायण के मस्तक पर भूषण के समान भूषित है। नरनारायणदेव भरत खंड के अचल देव हैं। भरत खंड में श्रीहरि अपार अवतारधारण करते हैं। वे सभी मूर्तियां एकस्वरूप होते हुए अनेक स्वरूप में भासती हैं।

जन्माष्टमी के दिन श्रीहरिने नरनारायणकी मूर्ति निष्कुलानंद मुनि के पास से मंगवाया। आधारानन्द छापने का कार्य कर रहे थे, यह देखकर श्रीहरि बहुत प्रसन्न हुए। नारायण मुनि को फूल का हार देकर छाती में चरणारविंद दिये। मूर्ति को छापने के लिये आधारानंद मुनि को पास में रखे। श्रीहरि प्रसन्न होकर प्रत्येक सन्त, वर्णी पार्षद तथा हरिभक्तों को पूजन हेतु नरनारायणदेव की मूर्ति दिये। बाद में आनन्द मुनि को बुलाकर कहे कि आप अहमदाबाद जाकर अपनी जगह में शिखरी मंदिर बनवाइये। इस ब्रह्मांड में भगवान नरनारायणदेव का प्रथम अवतार हुआ है। ब्रह्मा का सवा पहर दिन हुआ तब तक नरनारायणदेव हिमगिरी पर अखंड तप कर रहे हैं। काल भी कांप उठे ऐसा उनका तप है। इसके बाद इस भरतखंड में भगवान के कितने ही अवतार हुए हैं। नये नये चरित्र हुए हैं। अनन्त जीवों का उद्धार किये हैं।

श्रीहरि आनन्द मुनि से कहते है कि अहमदाबाद में मंदिर निर्माण मे धन-जन की चिंता नहीं करना। नरनारायणदेव के संकल्प में अष्टसिद्धि तथा नव निधियां हैं। नरनारायणदेव को कोई नर-नारी नहीं जानती कि महाप्रभु कितने प्रतापी हैं। हमें उन्हें प्रसिद्ध करना है। भरत खंड के वे मुख्य देवता हैं। फिरभी कोई जानता नहीं है। उन्हें हमे भरतखंड में ही स्थापित करना है। भगवान के मंदिर के लिए जैसी जो सेवा करेंगे उन्हें वैसा फल मिलेगा। आदर में ही देव का निवास होता है।

नारायणजी सुथार ने नरनारायणदेव की दूसरी प्रतिकृति बनाई। जिस में उद्धव, नारद इत्यादि को सेवा करते हुए बताया। नरनारायण के चरण के नीचे गरुड़ को बनाये। सूर्य चंद्र का बिंब भी उसमें था। श्रीहरि उस छाप को देखकर खूब प्रसन्न हुए। छाप की बहुत प्रशंसा किये। मुक्तमुनिको दिखाकर कहे कि ये प्रगट नरनारायण है, ऐसी सुन्दर छाप है। बाद में दूसरे मुनियों ने भी देखा सिद्धमुनि (आधारानन्द मुनि) ने भी कागज में मूर्ति को छपवाया। उसे देखकर श्रीहरि तथा संत बहुत प्रसन्न हुए थे। श्रीहरिने सभी को एक-एक मूर्ति दिया। श्रीहरिने मुक्ति के लिये मूर्तियों का रहस्य समझाया कि ये मूर्तियां ही इस सत्संग की बीज हैं। प्रथम नर-नारायण, हरि, तथा कृष्ण ये चार स्वरूप प्रगट हुये। ए चारो मिलकर एक ही स्वरूप हैं। भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए स्वरूप धारण करते हैं। एक होते हुए अनेक रूप तथा अनेक होते हुए एक रूप में प्रकाशित अपनी योग कला से होते हैं। उनके एक-एक रोम में अनंत कोटि ब्रह्मांड हैं। जीव की समझ कूप मंडूक जैसी है।

सं. १८७८ में अहमदाबाद मंदिर की प्रतिष्ठा उत्सव में जहाँ नरनारायणदेव की मूर्तियांथी वहा मुक्तमुनि आदि बडे संतो के साथ श्रीहरि दर्शन करने आये। उपवीत धारण किये हुए थे। श्वेत वस्त्र शरीर पर शोभ रहा था। ऐसी मूर्तियों को देखकर श्रीहरि प्रशंसा करने लगे कि संत हरि भक्तों के परम हित के लिए ही नरनारायण नैष्ठिक व्रत धारण करते हैं। वे प्रगट ही रहते हैं ऐसा मानना।

स्वामी के गुण सेवक में आते हैं । इसलिए उनकी सेवा से अपने व्रत का पोषण होगा । उनके वस्त्राभूषण, वाहन, भवन, भूमि, भोजन, फल, पुष्प आदि द्वारा एकबार भी जो भाव से पूजा करेंगे उन्हें उसका अनन्त फल प्राप्त होगा । एही समग्र पदार्थों के दाता हैं । प्रगटस्म में सदा विद्यमान रहकर सभी के मनोरथ को सिद्ध करेंगे ।

फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन जब प्रतिष्ठा का मुहूर्त आया तब नरनारायणदेव को श्रीजी महाराज ने सिंहासन पर उत्तराभिमुख प्रतिष्ठित किया । वस्त्राभूषण पहनाकर श्रीहरिने आरती उतारी । संतोने तथा हरिभक्तों ने दर्शन का लाभ लिया । मूर्ति की शोभा ऐसी थी कि दर्शन करने वाले का मन हटता ही नहीं था । सभी भावानुसार भेंट रख रहे थे । इस प्रकार नरनारायण भगवान गुर्जर खंड के मध्य में आकर वसे, जिससे श्रीनगर नाम सफल हुआ ।

वडोदरा के रामचन्द्र वैद्य का डाकोर में पूजन दर्शन का नियम था । पुत्र नहीं था जिससे वे पूनम दर्शन का नियम लिये थे । वे श्री गौड ब्राह्मण थे । राजद्वारी राजवैद्य थे । बडी प्रतिष्ठा थी । गरीबों की मुफत में दवा करते । डाकोर में विप्र हवेली में जब दर्शन करने जाते तब स्कते । एकदिन रणछोडराय के समीप दर्शन करते समय अधर्म घटित काम को देखे, जिससे मन में दोष आ गया । वे अपने निवास स्थान पर आये । उसी रात्रि में स्वप्न आया कि भगवान के प्रति श्रद्धा रखनी है तो स्वामिनारायण भगवान प्रगट ब्रह्म है । श्रीनगर में (अहमदाबाद) में संत रहते है, वे लोग भगवान का स्थान बतायेंगे । उनके मन में हुआ कि ऐसा विचार क्यों आया ? रणछोडराय ने पुनः स्वप्न में बताया की श्रीनगर जाओं । बाद में मन से विचार करके श्रीनगर के लिए प्रस्थान किये । कुछ साथियों को साथ लेकर श्रीनगर आये और महाप्रभुका दर्शन किये । उन्हें एकचमत्कार हुआ कि लोग इधर उधर भटकते हैं लेकिन सम्पूर्ण अर्थ की प्राप्ति तो यहीं है ।

श्रीहरिने वि.स. १९७९ वैशाख शुक्ल पंचमी के शुभ दिन ही भुज मंदिर में भी श्री नरनारायणदेव की स्थापना की थी ।

अहमदाबाद मंदिर उत्तरमुख तथा तीनशिखर से सुशोभित है । जिसमें मध्यपीठ पर स्वयं नरनारायण भगवान विराजमान हैं । दाहिनी तरफ के मंदिर में गोलोकविहारी तथा श्री राधाजी है । उत्तर भाग के मंदिर में अर्थात् पश्चिम तरफ धर्मदेव भक्तिमाता के साथ श्रीहरिकृष्ण महाराज विराजमान हैं । श्रीहरि के प्रकट इन स्यों का दर्शन करके संत हरिभक्त सभी आनंद को प्राप्त करते हैं ।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के विषय में जो नियमानुसार प्रति वर्ष फरवरी महिने की अंतिम तारीख के बाद प्रकाशित होनेवाला प्रथम अंक में स्पष्ट किया जा रहा है ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाश समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	स. गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रीयता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शा. स्वा. निर्गुणदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शा.स्वा. निर्गुणदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

होलिकोत्सव

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु नारायणस्वरुपदास (इलाहाबाद - यु.पी.)

होली आवी, आवी होली,
आओजन सव दौडी ।
राग द्वेष मिटावी दईने,
नाखा जीवन जोडी ॥
हैयामा आनन्द जगवती,
आवी आजे होली ।
प्रभु कार्यनी निष्ठा राखी,
बाधो साची टोली ॥

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन होलिकोत्सव मानाया जाता है । उस दिन लोग मुक्तमन से विचरण करते हैं । आत्मीयभाव को एक दूसरे के सामने रखते हैं । स्वैर भाव का जो परित्याग करके साम्यास्थिति को प्राप्त हैं वे ही होली के उत्सव का आनन्द ले सकते हैं ।

होली का उत्सव अर्थात् - वसंतोत्सव ! परंतु वसंतोत्सव में भी अपने संयम को खोना नहीं चाहिए । भगवान शिवजी द्वारा कामदहन की वात समझने योग्य है । वसंत को निमित्त बनाकर कामदेव ने भगवान शिव पर विजय प्राप्त करना चाहा परिणामतः उसका नाश हो गया । होली का रंग लेकर आने वाला होली का उत्सव हमें नये जीवन का सन्देश देता है ।

आयो रे आयो फागणियो रे आयो
होली नो रंग लायो रे हो ।
तन मन ने रंग दे उमंगे,
अंतर भी जव तो
भावो नी मस्ती ने सौना हृदियामां
रेलवतो ।
छोरु गामना भेणा मणया सौ,
जबरो जंग मचायो,
गोकुल मां पिचकारी लईने नीचे
यशोदा जायो ।
जीर्ण जूना पर्णो खंखेरी, नवले रंग
रंगायो,
नवजीवन नो आवे रादेशो, नवतर
चेतन लायो ।

होली से सम्बन्धित कथा भी प्रसिद्ध है । हरिण्याकशिपु नाम का एक राक्षस था । उसे चारो तरफ सोना ही दिखाई देता था । भोग ही उसका प्रधान अंग था । राक्षस अर्थात् खाने पीने की मजा मस्ती । सभी के जीवन में दुर्लक्ष्य ही रखता था । अपने को ईश्वर मानता था । दूसरा कोई भगवान नही है, मैं ही एक मात्र सत्ता हूँ । कीचड़ में कमल जैसे उस के यहाँ प्रहलाद का जन्म हुआ । प्रहलाद जब गर्भ में था तब उनकी माता नारद के आश्रम में थी । उनके ऊपर आश्रम के संस्कारो का असर पडा था । भारतीय संस्कृति की यही विशिष्टता है ।

प्रहलाद समा भक्तों अहिंया,
राक्षस ने पेटे पाक्या छे ।
कांटा वच्चे रही ने पढा पुष्पो,
प्रभु चरणों पाम्यां छे ॥

प्रहलाद का अंतःकरण भगवत भक्ति से भरा हुआ था । उनके पिता उनके विचारों को बदलने का अनेकों प्रयाश किये थें । जब विचारों में परिर्तन नहीं हुआ तब जान से मारने का प्रयत्न प्रारम्भ किया । यदि प्रहलाद का ईश्वरवाद सभी जगह फैल जाये तो भोगवाद का सफाया निश्चित समझना चाहिए । आसुरी वृत्ति का वाप पुत्र की इन वातों को कैसे सहन कर सकता है प्रहलाद को मारने के अनेकों प्रयत्न में से अग्नि में भस्म कर देने का भी एक प्रयाश था । इसलिए अग्नि में जलाने के लिये अपनी बहन को साथ में लेकर गोद में बैठाकर जलाने की आज्ञा की । जो स्वयं होलिका थी । जिसे ब्रह्मा का वरदान था की वह अग्नि में जलेगी नहीं । इसीलिए वह अपने भाई के आग्रह पर प्रहलाद को गोंद में रखकर अग्नि में प्रवेश की, परिणाम स्वस्म बालक प्रहलाद बच गये और होलिका स्वयं जल गयी । जगत में सद्वृत्ति के कुछ ही लोग होते हैं लेकिन वे सन्निष्ट हों तो, भगवन्निष्ठ हो तो उन्हें असद्वृत्ति ग्रसित नहीं कर सकती है । ऐसा अनुपम संदेश होली का उत्सव हमें देता है । अब प्रश्न यह है कि प्रभु भक्त प्रहलाद को जलाने का प्रयत्न

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १६

सत्संग सुरभि :

आज्ञा में रहने का प्रताप है

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

मांगरोल में सुथार कुटुम्ब में आनंदजीका जन्म हुआ था । महाराज के प्रति अधिक प्रेम हो गया था । उनकी मूर्ति या उनके स्वरूप में इतना अधिक प्रलीन हो गये कि सभी काम विसार कर उनके पीछे-पीछे रहने लगे । जब घर में आराम करते तब भी उन्हीं के स्वरूप का चिन्तन करते रहते । गीत गाते रहते । इस प्रकार देखकर पत्नी राजूबाई बहुत नाराज होती थी ।

एकबार पति को ऐसी लगन देखकर महाराज का मार्ग राजबाई ने रोका और कहने लगी ''भक्ति की क्या यही रीति है कि घर का, परिवार का, व्यवहार का, सभी कार्य छोड़कर केवल रात-दिन भक्ति करते रहेंगे तो हम स्त्रियों का क्या

महाराज समझ गयें । कोई उत्तर दिये विना आगे चल दिये । सायंकाल सभा में आनंदजी को बैठा देखकर बुलाये और कहने लगे जिस प्रकार कथा में बैठने का धर्म समझे हैं उसी प्रकार घर के कार्य करने का भी धर्म समझ लीजिए । क्या बच्चों को भूखे मारना है ? नहीं महाराज ! तो इस प्रकार का वर्तन क्यों करते हैं ? हमें दाग लगती है । आप जैसा कहेंगे वैसा ही करेंगे । आणंदजी का शब्द भावात्मक था । तो प्रातः से ही कामकाज में लगजाना । आलसी मानव से यह लोक तथा परलोंक दोनो विगडता हैं । काम क्या आता है ? कारीगर हूँ, मेरा काम सभी को पसन्द आता है । तो इस योग्यता को विकसित करिये, भगवान की कृपा मानकर इसका सदुपयोग करिये ।

दूसरे दिन से ही आणंदजी उद्यम प्रारंभ कर दिये । सम्पूर्ण दिन मेहनत करके सायंकाल कथा में आते । प्रतिदिन की धारा ऐसी हो गयी कि उत्तरोत्तर बढने लगे । एकदिन उनके मन में हुआ कि बम्बई महानगर में जाकर अपनी हाथ की कला का प्रदर्शन करके आगे बढे । ऐसा विचार करके बम्बई की तरफ जाने वाली जहाज की तलाश करने लगे । उसी बीच महाराज मिल गये और कहने लगे कि आणंदजी आप बाम्बे नहीं जाना, आप की भाग्य यही मांगरोल में खिल उठेगी । लेकिन महाराज.....

आप ऐसा समझते हैं कि परदेश जायेंगे तो अधिक कमायेंगे, सो ऐसा नहीं है आपकी नसीब वहाँ खिलेगी नहीं, आप हमजैसा कह रहे हैं - ऐसा करेंगे तो

आणंदजी समझ गये कि अन्तर्यामी से कुछ छिपाने लायक नहीं है, ये तो सभी जान जाते हैं । उसका उपाय भी बताते हैं । कितनों के मुंह से आणंदजीने सुना कि - किसी के प्रारब्ध में लिखी बात को भी महाराज मिटा देते हैं । ऐसा विचारकरके आनंदित हो गये ।

महाराज के चरणों में गिरकर केवल इतना ही कहे कि महाराज बाहर जाने की इच्छा तो नहीं है लेकिन कुछ अच्छा काम करके आगे बढने की इच्छा तो है, लेकिन क्या करूँ ?''

इसका निकाल तो हो जायेगा आणंदजी ? लेकिन इसके अलांवा क्या कारण था उसे भी बता दीजिए उसका भी निराकरण हो जागेया ।

अहो ! महाराज तो आणंदजी के घर के पति-पत्नी के बीच के रहस्य को भी जान गये हैं ।

वात ऐसी है कि आणंदजी को पत्नी राजूबाई महाराज के प्रति अवगुण का भाव रखती थी, जिसका उन्हे दुःख था । जिस कारण वे दूर कहीं जाकर धन्धा करने का विचार किये थे । क्योंकि घर में झगडा हो तो अशांति रहती है, जिस कारण भजन भक्ति भी नहीं होती ।

घर में शांति होनी चाहिए, मैं आपके साथ आपके घर आता हूँ । महाराज आणंदजी को आगे करके उनके घर चल दिये, यह कहते हुए कि घर की शांति विना मन में शांति होती नहीं है ।

आपको न कहने लायक जब वह शब्द बोलती है तब मेरा दिल दहल जाता है । हमें क्या कहेगी, हमें कुछ लगता ही नहीं है ।

गली से सब इकठ्ठा हो जायेंगे ?

इसकी चिन्ता मेरे ऊपर छोड दो । कभी लड भी लेना चाहिए । इस पार या उस पार । हम आपके साथ है इसलिये घबडाना नहीं । आज परमात्मा को एकजीव को सुधारना था । महाराज घर में प्रथम पग रखे ही थे कि राजूबा चमक उठी । पीछे आणंदजी को भी खडे देखी, घर में नहीं है ऐसा बहाना भी करने का अवसर नहीं था । बैठने का मार्ग देकर डोरी तथा घड़ा लेकर कूप पर पानी लेने चल दी । महाराज ने रोक लिया, और कहे हमे पानी दो हम प्यासे हैं, ।'' राजूबाई

को क्या खबर कि यह प्यास कैसी है।

पानी का लोटा महाराज के सामने रखदिया। महाराजने उनकी नाराजी को पढ़ लिया लेकिन राजूबाई की ज्यों दृष्टि पड़ी की समाधि लग गयी।

समाधि में राजूबाई का अहंकार जाता रहा, स्दन होने लगा, कटुता का भाव समाप्त होने लगा, प्रेम भाव जगने लगा। आणंदजी को आज्ञा थी कि आप को कुछ करना नहीं है, उधर राजूबाई तडफडाने लगी क्या होगा ? थोड़े समय के बाद जब आंख खोल के देखीं तो जो अन्दर था वह सब बाहर थाही नहीं। बल्कि महाराज दूर खडे थे और मन्द-मन्द मुश्करा रहे थे। वह विचार करने लगी की भीतर का अनुभव क्या था ?

राजूबाई ! महाराजने उन्हे बुलाया और कहा कि लो यह माला घुमाओ। शान्ति हो जायेगी। महाराजने माला दिया उसे वे फिराने लगीं। धीरे-धीरे अनुभव होने लगा कि जो परमात्मा के प्रति मलिन भाव था वही निकलते समय पीडा दे रहा था। अब क्या, सामने तो पीड़ा हर विद्यमान थे जो मन्द मुस्कान विखेर रहे थे। आकर्षित कर रहे थे। उनके भीतर की मलीनता निकल गयी थी। अब तो महाराज एवं महाराज के भक्त अपने पति के प्रति आनन्द-स्नेह का सागर लहरा रहा था।

व्यवस्थित होकर राजूबाई ने माला फेरा। अभी आधी ही फेरी होंगी की हृदय में आनन्द की लहर उठने लगी। आज मेरे घर भगवान पधारे हैं। आज हमारा कल्याण हो गया। मैं उनके लिए क्या करुँ इत्यादि भाव विह्वल शब्द बोले जा रही थी। इसी बीच महाराज बाहर निकल गये।

उन्हीं के पीछे आनंदजी भी निकल गये। चलते हुए महाराजने पूछा कि आपने कहा था कि हमें कलाकारी का काम अच्छा आता है तो आप अपना कलाकृति का काम प्रारम्भ कर दीजिए। आनन्दजीने कहा महाराज ! मैं हिंडोला बनाऊँ ! महाराजने हाँ करके भविष्य भी बतादिया। महाराज की स्मृति के साथ ही आणन्दजीने अद्‌भुत हिंडोला बनाया। यह तो महाराज के आशीर्वाद से बना है। इतना उत्तम बना है तो इसके अधिकारी महाराज ही हैं। महाराज ! आप जब आज्ञा करें तब सभा में लाकर आपके चरणों में हम अर्पित करें।

आणन्दजी ! आपने कहा और हम इसे स्वीकार कर लिए। आप ऐसा करिये इस हिंडोले की खाट नवाब साहब को दे आइए। उन्हें इसकी कला की समझ बताइयेगा। जब वे मूल्य लेने की बात करें तो उनसे जमीन मांगलीजिएगा।

अपने प्रेमी भक्त की पीड़ा हरने के लिए प्रभु क्या क्या करिश्मा कर रहे थे। नवाब हिंडोला देखकर खूब प्रसन्न हुआ। हमारे राज्य में ऐसाकारीगर रहता है यह जानकर हमें बड़ा आनन्द हो रहा है। दीवान को तत्काल आदेश किये कि आणन्दजी जो भी मांगे खुशी से दिया जाय। आणन्दजी ने जमीन मांगा तो पुनः नवाब ने कहा इन्हे जहाँ जमीन चाहिए वहीं दे दीजाय।

महाराज ने जैसा कहा वैसा आणन्दजीने किया परिणाम स्वरुप आज मानपान सभी मिल गया। नवाब के कहने से गाँव के सभी लोग आणन्दजीभाई कहकर बुलाने लगे। राज्य का मान मिले तो इसी में सभी मान आगया।

परंतु राजुबाई के मन में हुआ कि महाराजने जमीन तो दिला दिया लेकिन पैसा तो नहीं। पैसे के विना कैसे चलेगा। आणन्दजी ने समझाया कि हम हृदय से गरीब नहीं है महाराज हमारे साथ हैं।

भगवान की इच्छा से यह भावना भी फल गयी। महाराजने आज्ञा की कि रात में ही खोदकाम चालू करना। खोदकाम प्रारम्भ किये थोड़ा ही खोदे थे कि कुदाल जाकर एक घड़े से टकराई। उसे बाहर निकाला तो अमूल्य धन था। उसे लेकर घर आये और पत्नी को कहे कि अब तो संतोष हुआ न ? द्रव्य की कमी खटक रही थी- वह भी महाराजने पूर्ण कर दिया।

आपने इसे अपना द्रव्य माना ? यह तो महाराज का द्रव्य है इसे महाराज को लेजाकर दे दीजिए। बाई के हृदय में कितना परिवर्तन था।

परिश्रम का है तो भी, इसे सुवह होते ही महाराज के पास दे आइयेगा। आणन्दजी ने ऐसा ही किया। महाराज तो सबकुछ जानते थे। इसलिए उन्हें कोई नवीन नही लगा। बस इतना ही कहे पेटारी में पुराने वर्तन है उसमें से एक बड़ा लोटा स्मये से भरकर नवाब साहब को दे आना।

आनन्दभाई आप क्या ले आये हैं ? नवाब सम्मान के साथ बैठाये। सभी बात सुनकर कहने लगे यह धन तो आप की जगह में से निकला है। यह आप का है हमारा नहीं है। हम नहीं लेगे।

बाद में महाराज ने दूसरी युक्ति की। नवाब के साहजादे के लिए इस सोने में से कंदोरा बनाकर पहनाने लेजाइयेगा वे ना नही करेंगे।

महाराज की आज्ञानुसार आणन्दजी

सुन्दर कन्दोरा बनवाकर बेगम साहबा की हाजिरी में साहजादे के गले में पहनादिये । बेगम समझ गयी कि आणन्दजी को कोई विशेष जरूरत है जिससे भेंट दिये हैं। बेगम साहबा सारे रहस्य को जानकर कही कि आप दोपहर में फिरसे आइयेगा ।

दोपहर में आणन्दजी मिलने जांय कि उससे पहले ही नवाब का आदमी बुलाने आ गया । उन्ही के सामने लेख तैयार हुआ । जिसमें लिखा गया कि जो जमीन दी गयी है वह आकाश से पाताल तक सभी आणंदजी की है इसमें जो भी द्रव्य निकले वह भी इन्ही का है । इस पर किसी का कोई हक नहीं है ।

हाथ में लेख आया, जिसे लेकर आणन्दजी महाराज के स्थान पर गये । महाराज को दंडवत करके उन्हीं के चरण में अर्पित कर दिये । लीजिए महाराज ! आप का है आपके चरणों में अर्पित करते हैं ।

महाराज बडा प्रसन्न हुए । आणन्दजी को उठकर हृदय से लगालिये । बाद में कहे कि जाइये खोदकाम प्रारम्भ कीजिए भाग्य आपकी राह देख रही है ।

महाराज देने वाले तो क्या बाकी ? उसमें से इतना अपार धन मिला कि तीन मंजिल की हवेली बन गयी । आणंदजी भाई धनी हो गये । उसी हवेली में एकवार वे बड़ा उत्सव किये जिसमें सगे संबन्धी आये । उस समय किसीने पूछा कि आणन्दजी आप बताइये कि यह सुख समृद्धि आप को कैसे मिली ?

लोहार दम्पती खूब विनयपूर्वक कहने लगे कि - हमने महाराज की सभी आज्ञा पालन किया जिसका यह परिणाम है । हमारा कुछ नही यह तो महा प्रभु के प्रताप का फल है ।

सगे समबन्धि इस प्रकार निरभिमानिता देखकर महाराज का मनहीमन वन्दन कर रहे थे । महाराज जिसे चाहे उसे कौन हटा सकता है ।

श्रीहरि द्वारा माया ममता को दूर करने की उपाय

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट

यह समग्र जगत माया एवं स्वार्थ से भरा हुआ है । बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक की यात्रा में माया एवं ममता का ही दर्शन होता है । माया के कारण ही हम मोक्ष के मार्ग से वंचित रहजाते हैं । हमारी इच्छाओं का अंत नही है । एक इच्छा पूरण होते ही दूसरी इच्छा आकर खड़ी हो जाती है । स्त्री, धन, पुत्र, घर, बंगला, गाड़ी, खाना, पीना, आनन्द आदिक में मनुष्य का मन रचांपचा रहता है ।

भगवान में हमें अखंड प्रेम करना है । लेकिन कैसे हो सकता है ? आसक्ति ही अपार है । हम यह भूल गये है कि भगवानने यह मानव शरीर क्यों दिया है, मोक्ष के मार्ग को छोडकर संसार के माया जाल में उत्तरोत्तर फंसते ही जाते है । जबकि भगवान ने भक्ति का मार्ग सरल कर दिया है । हमारे इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने तो कितने मंदिर बना दिये, आचार्य महाराज के पास ज्ञान प्राप्त करना और दीक्षा लेकर भगवत् भक्ति करना ही इस शरीर प्राप्ति का रहस्य है । संतो से भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । श्रीहरि ने शास्त्रों की रचना करवा दिया है जिसका चिन्तन मनन करके भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है । माया के बन्धन से छूटने के उपरोक्त बहुत सारे उपाय हैं । हम चाहे जितना भी उपाय करें लेकिन माया का बन्धन छूट सकता नहीं है । इसीलिए श्रीहरिने वचनामृत में अनेकों जगहों पर विषय विकार को दूर करने का उपाय बताया है । इस प्रकार हम सभी पर श्रीहरि का अपार प्रेम है, अपार ऋण है, जो कभी उतर सकता नहीं है ।

गढडा के अन्त्यं के ३९ वें वचनामृत में श्रीजी महाराजने भगवान की माया क्या है ? उसे कैसे जीता जा सकता है ? इन सभी पर खूब प्रकाश डाला है । वे कहते हैं कि - देह के प्रति अहंबुद्धि तथा देह संबन्धि पदार्थ के प्रति ममत्वबुद्धि ही माया है । इस माया को दूर करना तथा इस माया से दूर हुआ वही मोक्ष का भागी है । माया से दूर होकर भगवान की भजन भक्ति करनी चाहिए । आप इस बात को आज समझे या समय बीतने पर समझे पर भगवान के भक्त नारद प्रहलाद, हनुमान आदिने भगवान से एक ही मांग की कि हे भगवान ! अहं ममता से हमारी रक्षा करना । आपके प्रतिएक मात्र निष्ठा-भक्ति बनी रहे ।

ऐसा करना कोई कठिन नहीं है । श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा माया के बन्धन को काटा जा सकता है । श्रीजी महाराज कहते हैं कि भगवान के भक्त को आत्मनिष्ठा का बल, तथा भगवान के माहात्म्य का बल ये दोनो बल होना आवश्यक है । आत्मा को अपना स्वरूप मानना चाहिए तथा आत्मा को देह से पृथक समझना चाहिए ।

भगवान तो अनेक ब्रह्माण्डों के राजाधिराज हैं । भगवान सभी सुखों की राशि हैं । भगवान सम्बन्धी सुख नित्य है कभी नाश नहीं होता है । भगवान सत्यस्वरूप हैं । सर्व अवतार के अवतारी हैं । इस प्रकार भगवान के माहात्म्य का चिन्तन करें तो आसक्ति दूर हो जायेगी । भगवान स्वामिनारायण हमें मोक्षभागी बनाने के लिए कितना अथक परिश्रम किये है - यह बात इस वचनामृत से स्पष्ट हो रही है । माया दूर करने के अनेकों उपाय बताये हैं । सुगम मार्ग दिखाये हैं ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

माफ करे वह बड़ा

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

बड़ा कौन है ? जिसके पास सत्ता है । जिसके पास बहुत सम्पत्ति हो ? मिलकत है ? किस को पूछें कौन बड़ा ? इस लेख को पढने से ख्याल आ जायेगा कौन बड़ा है ?

महाराष्ट्रमें एक महात्माजी थे । उनका नाम था एकनाथजी । बड़े प्रसिद्ध महात्मा थे । वे महात्मा एकबार दक्षिण की यात्रा करने गये । जिस में बहुत प्रसंग हुए हैं जिस में एक-दो का उदाहरण देते हैं । हरिद्वार से गंगाजल लेकर कांवर भरकर रामेश्वर में चढाना था । उस समय गमना गमन रेल या अन्य साधन की व्यवस्था नहीं थी । पैदल चलके जाना था । रास्ते में एक गधा मरने जैसा था । लोग गधे को तुच्छ प्राणी मानते हैं । यह मनुष्य की भूल है । गधा बहुत वफादार प्राणी है । वह अपने मालिक से खाने के लिए कुछ मांगता नहीं है । वह स्वयं अपनी उदर पूर्ति करलेता है । फिरभी उसे लोग तुच्छ समझते हैं । मरने जैसा अर्थात् एकदम कमजोर उस गधे पर एकनाथजीकी दृष्टि पड गयी । महादेवजी के लिये तो कांवर का जल लेकर जा रहे थे उसमे ले गधे के मुख में डालदिये । सभी लोग गाली देने लगे । एकनाथ में थोडी बुद्धि है । भोलानाथ के लिये जो गंगाजल लिये थे वह गधे को पिलादिये । लेकिन संत के हाथ का जल पीते ही वह गधा ठीक हो गया । स्वस्थ हो गया ।

बाद में एकनाथजी वहाँ से आगे चले । भिक्षा मांगकर बाटी बनाये तथा भगवान शालिग्राम को बालमुकुन्द को भोग लगाने के लिए आंख मूंदे कि उसी समय एक कुत्ता आया और बाटी लेकर भागा । एकनाथजी की आँख खुली तो देखा कि कुत्ता बाटी लेकर भाग रहा है वे उसके पीछे दौडने लगे, क्योकि उसमें घी लगाना रह गया कटोरी में एक ही चम्मच घी था जिसे लेकर दौडने लगे भगवान ने सोचा कि इतने एकनिष्ठ संत इतनी तीव्रगति से कुत्ते के पीछे दौड रहे हैं बाटी में घी लगाकर खिलाने के लिए, इसलिए भगवान उसी कुत्ते में से प्रगट हुए और कहे कि लाओ एकनाथजी लाओ घी, ऐसा कहते हुए बाटी को हाथ में लेकर आगे खडे हो गये ।

एकनाथजी श्रीरंग पहुंचे । दक्षिण का एकधाम श्रीरंग क्षेत्र काबेरी में स्नान किये । श्रीरंग भगवान का दर्शन करने चले आ रहे थे कन्धे पर भीगा वस्त्र था । छत के ऊपर से कोई अधर्मी थूक दिया वह जान बूझकर कि यह हिन्द् साधु है, अभी यह गाली देगा तब इसे बतायेंगे । लेकिन एकनाथजी ऊपर देखे ही नहीं मेरे ऊपर कौन थूका है । वे वापस काबेरीजी में जाकर स्नान किये उसी प्रकार भीना कपडा पहने वापस आ रहे थे पुनः उस विधर्मी ने थूका, इस प्रकार सुवह से दोपहर तक १०० बार उसने थूका और वे काबेरी में स्नान किये, बाद में वह विधर्मी नीचे उतरकर एकनाथजी के पैर में गिर गया और क्षमा मांगने लगा तो एकनाथजी ने कहा अरे भाई आप कौन हैं ? तो उसने बताया कि मैं बहुत बडी गलती किया हूँ अपराध हुआ है क्षमा कीजिए, तो एकनाथजीने कहा अरे भाई ! आप से गल्ती नहीं हुई हैं हमारा आपने बड़ा उपकार किया है दक्षिण भारत की गावेरी नदी को अत्यन्त पवित्र कहा गया है, ये दक्षिण की गंगा है । मैं आलसी हूँ । महाराष्ट्र से चलकर यात्रा करने आया हूँ । आज ही निकलजाने वाला था । प्रातः कावेरी में स्नान करके श्रीरंग महाप्रभु का दर्शन करके दोपहर में निकलने का विचार था । लेकिन आपने १०० वार स्नान कराकर पवित्र कर दिया । वह एकनाथजी का शिष्य बन गया । एकनाथजी ने उसे गुरुमंत्र देदिया । आश्चर्य की बात तो यह कि आज सैकड़ों वर्ष वीत जाने पर भी मुसलमान होते हुए भी सभी हिन्दू धर्म पालते हैं । यह क्षमा का गुण हैं । इससे हमें शिक्षा लेनी चाहिए ।

क्षमा कौन कर सकता है ? कमजोर आदमी कभी क्षमा नहीं कर सकता । क्षमा करने का काम तो

किसी शक्तिशाली व्यक्ति का है । कमजोर व्यक्ति क्षमा करने योग्य हैं । जिसमें दंड करने की शक्ति हो, फिर भी वह क्षमा करे वहीं बड़ा है, इसीलिए तो भगवान श्री स्वामिनारायण ने कहा है कि - "समर्थ थका जरणा करवी एनानुं सुनुं काम नथी ।" जिसके पास शक्ति हो वह सहन करे, क्षमा देने वाला बडा होता है । निष्कुलानंद स्वामी ने कहा है - कि

क्षमा सम खडग नहीं, धीरज सम नहिं ढाल ।

झरणा सम जाय नहि, मौन सम नही शाप ॥

क्षमा में तलवार जितनी शक्ति है, एक संस्कृत में उक्ति है - क्षमा खड्ग करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति । जिसके पास क्षमा स्मी खडग हो उसका दुर्जन क्या कर सकता है । इसीलिए तो अपने सम्प्रदाय में इतिहास के पत्तो में लिखा है कि क्षमा स्मी सद्‌गुण ही गौरव है ।

•

यात्रा करे लेकिन स्वभाव नहीं छूटे

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक महात्माजी का आश्रम था । महात्माजी खूब भजनानन्दी थे । उनकी कथा वार्ता सुनने के लिए गाँव-गाँव से लोग आते थे । उन महात्मा के साथ सभी की खूब आत्मीयता हो गयी थी । जिस प्रकार कोई कुटुम्बर के साथ प्रेमकरता है ऐसी आत्मीयता ।

एकबार महात्माजी अपने आश्रम में आने वाले भक्तों को यात्रा में लेजाने का विचार किये । सभी को यह बात की कुछ हरिभक्तों ने पूछा कि यदि आप इस यात्रा में जानेवाले हों तो ही इस यात्रा में हम जायेंगे । प्रेम जहाँ होता है वहाँ तो ऐसा कुटुम्बी भाव आना स्वाभाविक था । इसलिए महात्माजी को आग्रह करके यात्रा में सभी आत्मीय भक्तों ने साथ ले लिया । महात्माजी का आना सुनकर बहुत सारे भक्त तैयार हो गये ।

एकदिन एकचोर आश्रम में आया । माहात्माजी का पैर छूकर निवेदन किया कि मैं चोर हूँ लेकिन जब से मैं सुना हूं कि आप यात्रा निकाल रहे हैं और स्वयं साथ चल भी रहे हैं तो मेरे मन में भी आपके साथ यात्रा में आने की इच्छा हो गयी है । लेकिन महात्माजी ने कहा हमें तुम्हारे ऊपर भरोसा नहीं है, तुम चोर हो लेकिन चोरने खूब आग्रह किया, निवेदन किया कि हमें आप के साथ यात्रा में आना ही है । महात्माजी पुनः उसे समझाये कि भाई तूँ किसी की कोई चोरी कर लेगा तो मेरी बदनामी होगी, इस लिये तूं प्रतिज्ञा कर कि हम चोरी नहीं करेंगे तो ही तुझे साथ ले जायेंगे । वह चोर कहने लगा हे महात्माजी ? मैं चौरी नहीं करुंगा । इस प्रकार विश्वांस दिलाकर वह यात्रा संघ में जुडाया । यात्रा का दिन निश्चित हो गया और सभी लोग यात्रा में निकल पडे । यात्रा में सभी कीर्तन भजन करते हुए जा रहे थे । सभी अपना बिस्तर-पोटला साथ लिये हुए थे । संघ आगे बढता जा रहा था । सभी के उत्साह तथा भाव को देखकर महात्माजी को आनन्द आ रहा था । फिर भी महात्माजी के मन में चिन्ता लगी रहती । कारण यह कि जो साथ में एक चोर भी चल रहा था । वह चोरी न करे तो अच्छा । इस प्रकार एक एक दिन रास्ता कटता जा रहा था । यह यात्रा एक महीने की थी । अभी एक सप्ताह ही हुआ था कि किसी यात्री ने आकर कहा मेरे थैले में से मेरा स्माल चोरी हो गया है । इत ने में किसी यात्रीने आकर कहा महात्माजी मेरे थैले में भूल से आ गयी है । लेकिन हमें तो खबर ही नहीं यह स्माल मेरे थैले में आयी कैसे । जिसकी स्माल थी उसे वापस मिल गयी । दूसरे दिन चार जन सिकायत करने आये कि मेरी पाकिट चोरी हो गयी है । दूसरे ने कहा मेरी पुस्तक चोरी हुई है । किसी ने कहा मेरे थैलै में सोने का चयन किसी ने रख दिया है । अन्यने कहा पूरी वेग ही मेरे आसन पर कोई दूसरे की रख दिया है । इस प्रकार एक दूसरे की सामान आगे पीछे होने लगी थी । कोई की चोरी तो नहीं हुई लेकीन इधर-उधर होने लगी थी । परेशान होकर महात्माजी उस चोर को बुलाकर कहे "तू सच्चा बोलना यह सामान आगे-पीछे कौन करता है ? चोर हाथ जोडकर माफी मांग कर कहा कि "यह सभी इधर-उधर मैं ही करता हूँ ।" क्यों करते हो ? तब चोरने कहा, महात्माजी चोरी हमारा धन्धा है । यदि मैं एक महीने चोरी न करुँ तो यह आदत छूट

जायेगी, इसलिए मैं सामान इधर की उधर करता रहता हूँ।

मित्रों यह पढकर कुछ ख्याल आया ? किसी को अपना स्वभाव छोड़ना नहीं है, यदि स्वभाव छूट जाये तो बेडा पार हो जाय ।

निष्कुलानंद स्वामीने कहा है -

"आंकडो वांकडो चीढीना सरीखो,
कदी न राखीये वारुं ।
देखी दगे कोई दया न आणे,
पडे माथा में पेजारुं ॥"

वीछी को देखकर किसी को दया नहीं आती । ज्यों देखते हैं तुरत उसे मारडालते हैं । क्योंकि वह डंक मारने के स्वभाव को नहीं छोडती । इसीलिए सभी दुःखी होते हैं, तो स्वभाव छोड़ने में हित है ।

स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत में स्वभाव छोड़ने का उपाय बताया था । जैसे कोई बाप को या भाई को मारडाले तो उसके साथ कैसा बैर हो जाता है । इस प्रकार का वैर यदि स्वभाव के साथ रहे तो खराब स्वभाव छूट जायेगा ।

पृष्ठ १० से आगे

होलिकोत्सव

जिस होलिका ने किया उसका पूजन आज भी हजारों वर्षों से क्यों करते आ रहे हैं । इस के पीछे कारण यह है कि - जिस दिन होलिका प्रहलाद को लेकर अग्नि में बैठने वाली थी उस दिन नगर में सभी लोगों ने घर में अग्नि प्रगट करके अग्निदेव की प्रार्थना की थी कि प्रहलाद को न जलावें । लोकहृदय को प्रहलादजीने किस प्रकार जीत लिया था कि इसका प्रतिबिम्ब समाज के ऊपर पडा था । यह एक विचार वैचित्र्य की बात नहीं है, यथार्थता है।

अग्निदेव लोगों के भाव को समझ गये और होलिका जल गयी प्रहलाद नर श्रेष्ठ बन गयें । प्रहलाद को बचाने की प्रार्थना हेतु अग्नि की आज भी पूजा का क्रम चालू है । इसी प्रकार होलिका पूजन असद्वृत्तियों के नाश हेतु तथा सद्वृत्तियों के रक्षण के लिए लोगों के हृदय में रही हुई शुभकामना की प्रतीक समान होलिका का सभी स्वागत करते है ।

होलिकामागतां दृष्ट्वा हृदि हर्षन्ति मानवाः ।
पापमुक्तास्तु संजाता क्षुद्रता विलयंगता ॥

होलिका दहन के बाद लोगोने आनन्द मनाया । आनंद से वातावरण रंगीन हो गया । रंग-गुलाल एक दूसरे पर छोडने लगे । कितने तो धूल-कीचड इत्यादि फेंकने लगे । सभी लोग छोटे-बड़े का भेद भूल कर एकत्र होकर उल्लास से नाचने लगे । यही महापुरुष के लक्षण हैं जिनके प्रताप से सभी एकसूत्र में बंध सके।

ऊंच नींचना भेद भुलावी,
अहंभावना खोटी ।
कौरवनी सेना वहोळी पण निकळी
आवज मोणी ॥

प्रहलाद छोटे-बडे सभी को प्राणवान किये हैं । प्रहलाद ही ऐसे हैं जो भगवान को अचेतन में से प्रगट होना पड़ा नर में से सिंह बने । नर का प्रेम तथा सिंह का अविवेक या साहस दोनो को एकत्रित करके हिरण्याकाशिपु का बध हुआ । लोक जागृति से विकाश होता है दुष्ट वृत्ति का पराभव होता है यही होलिका दहन से सीख मिलती है ।

एक बीजा ना दोष भूलिने जो
गुण ने खोणी ।
गुणदर्शन थी कार्य विकसतु, ए
समझावे होली ॥

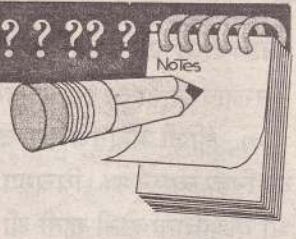
होली से अपने जीवन में गन्दे विचारों को जलाने की भी सीख मिलती है ।

होली का उत्सव फाल्गुन महीने में फाग के गीतों से आनन्दित करने वाला है ।

वसन्तोत्सव भी संयम की दीक्षा देता है । संघ निष्ठा की महिमा समझाता है । इस के साथ मानव के भीतर असद्वृत्ति को जला देने का संदेश भी इस उत्सव के बहाने मिलता है ।

पाप जलाओ होलिका में,
भरो पुष्पनी ओणी ।
प्रभुपाद जीवन धरशो तो,
होली एज दिवाली ॥

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ श्रीहरि प्रथमबार अहमदाबाद कब और कहाँ पधारे थे ?

प्रश्न : २ देवानन्द स्वामी का जन्म किस गाँव में हुआ था ?

प्रश्न : ३ स्वामिनारायण भगवान बन्दरो से किस स्थल पर माला फेरवाये थे ?

प्रश्न : ४ कांकरिया तालाब का पहले क्या नाम था ?

प्रश्न : ५ इन्द्रने नया गुरु किसको बनाया ? इन्द्र पुनः उनका क्या किये ? इन्द्रने किसका चार भाग किया ? क्या क्या ?

प्रश्न : ६ श्री स्वामिनारायण भगवानने किस चार संतो को स.गु. की पदवी दिये और किस गाँव में ?

प्रश्न : ७ अहमदाबाद कालुपुर में जब स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण हो रहा था उस समय उपयोग में आने वाले पत्थर को किस गाँव के राजाने रोकवाया था ? वहाँ के राजा को किसने कंठी बांधी थी ?

फरवरी २००६ महीने के प्रश्नपेटी का सच्चा उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) मध्य मंदिर में गोपीनाथ हरिकृष्ण महाराज इस प्रकार तीन देव, दाहिनी तरफ के मंदिर में श्री धर्मदेव, भक्तिमाता वासुदेवनारायण, बायीं तरफ श्री रेवती-बलदेव, हरिकृष्ण महाराज तथा सूर्यनारायण, उत्तर की तरफ प्रदक्षिणा में श्री घनश्याम महाराज । (२) गद्दी पर विराजमान होने के समय उम्र २१ वर्ष की थी । (२० वर्ष ६ मास) (३) सत्ययुग-१७२८०००, त्रेत्रायुग-१२९६०००, द्वापरयुग-८६४०००, कलियुग-४३२००० । (४) १. व्याससूत्र, २. चारवेद, ३. श्रीमद्भागवत, ४. श्रीविष्णु सहस्त्रनाम, ५. श्रीमद् भगवद्गीता, ६. श्रीविदुरनीति, ७. श्रीवासुदेव माहात्म्य, ८. याज्ञवल्क्यस्मृति । (५) सम्वत् १८८४ वैशाख वद । (६) १. नित्यप्रलय, २. निमित्तप्रलय, ३. प्राकृतप्रलय, ४. आत्यन्तिक प्रलय । (७) विष्णुदास डभाण गाँव के थे ।

१. रविराजसिंह गोहिल
२. धीरूभाई मधुभाई काछडिया
३. पीनाबहन हिरेनकुमार (मुंबई)
४. पटेल गीताबहन (सुरेन्द्रनगर)
५. वाडीलाल रामदास (बापूनगर)
६. काछडिया राधिका (अडताला)
७. उर्मिलाबहन पटेल कल्पनाबहन (वाडज)
८. सोमाभाई वीरचंदभाई पटेल (राणीप)
९. पटेल त्रिभोवन लक्ष्मणभाई (वाडज)
१०. नागजीभाई वी. पटेल (चांडलोडिया)
११. अमृतभाई मोदी (सोजा)
१२. पीपडिया निलेश लालजीभाई (चराडवा)
१३. अंजनाबहन, सकरबहन, शारदाबहन पटेल (नांदोल)
१४. राठोर शामजीभाई (हणवद)
१५. सविताबहन पटेल (विराटनगर)
१६. सुभद्राबहन रमेशभाई (कनीपुर)
१७. सोनी भगवानदास वेलजीभाई (मोरबी)
१८. दिना जे. कडिया (इन्दौर -एम.पी.)
१९. गोरधनभाई राघवजीभाई (जामसर)
२०. शिगाणा गीताबेन (बापुनगर)
२१. खिचडिया रिन्कु (बापुनगर)
२२. सोनी नवीनचन्द्र छगनलाल (राजकोट)
२३. चोटलिया पुष्पाबहन (घूलकोट)
२४. मोखासण स्वा. मं. बहनें
२५. खीमजीभाई (मोरबी)
२६. माधवजीभाई (मोरबी)
२७. सां.यो. कंचबना-मेडा (महेसाणा)
२८. पटेल कोकिलाबहन सुभद्राबहन (वडु)
२९. पुराजी जगदीश भगत (मोखासण)
३०. विसराम, हरजी, लीलावती विसराम (कच्छ)
३१. मकवाणा नीता, रमेश, नरेन्द्र (सापकडा-हडवद)
३२. कंचनबहन भगवानजी पढीयार (मोरबी)
३३. रामजी प्रेमजी हालाई (कोडायता-कच्छ)
३४. कंचनबहन बाबूभाई पटेल (रतनपर-मूली)
३५. मृदुलाबहन वी. सोनी (नवावाडज)
३६. पटेल गांडाभाई केशवलाल (डढाणा)
३७. सां. रंजनबा, नानी बहन (स्वा.मं. विराटनगर)
३८. पीयुष एच. पटेल (विराटनगर)
३९. विमलाबहन जयंतीभाई (चलौड़ा)
४०. सां. कोकिलाबहन (सुरेन्द्रनगर)
४१. माणेकबहन शिल्पाबहन (दहेगाँव)
४२. लालजी आर. ठक्कर (विराटनगर)
४३. पटेल प्रवीणभाई अंबालाल (वडु)
४४. पुजारी परेश भगत (धनसुरा)
४५. सां.यो. नानबाई (केरा-कच्छ)
४६. हसमुखभाई सवजीभाई गवाणी (गढडा देश)
४७. रमाकान्त ब्रह्मभट्ट (वडोदार)
४८. नानजीभाई लखमणभाई (नवा वाडज)
४९. गोरधनभाई शंकरलाल पटेल (सोजा)

नोंट : प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद का आया हुआ उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोक जानलें ?

विगत मास के प्रश्न में रावण के पिता का नाम पुलस्त्य नहीं बल्कि (विश्रवा ऋषि) हैं । जो गल्ती से गलत लिखा गया था । क्षमा करियेगा । प्रश्नों का उत्तर स्वच्छ अक्षर में वांचा जा सके ऐसा लिखें तथा आपका नाम वांचा जा सके ऐसा लिख कर भेंजे ।

।। भक्तिसुधा ।।

महाराज से बडा कोई नहीं

- तरलाबहन अतुलभाई (अहमदाबाद)

१. श्रीजी महाराज को कथावार्ता का नित्य व्यसन था। विचरण के समय भी कथावार्ता होती रहती थी। सत्संग होता रहता था। जहाँ रुकते वहाँ भागवत की कथा करवाते थे।

एक समय गढपुर के दरबार में भागवत की कथा हो रही थी। जिस में दशमस्कन्ध की कथा चल रही थी। दशमस्कन्ध श्रीजी महाराज को बहुत प्रिय था। कारण यह की उसमें गोप-गोपियों की कथा के माध्यम से भक्ति शास्त्र की झलक मिलती है। इसी का चिन्तन करते लाडुबा रात्रि में सो गयी, गोपियां कितनी भाग्यशाली हैं जिस में परमात्मा साक्षात् मिले हैं।

मध्यरात्रि बीती होगी कि किसी के पदचांप की आजाव सुनाई दी और लाडूबा ने पूछा कि आप कौने हैं? तब सामने से आवाज आई हम व्रजकी गोपियां हैं। हमसे आप बड़ी भाग्यशाली है, क्योंकि परमात्मा आपको साक्षात् मिले हैं जो आप की आज्ञा में रहते हैं। हम आज आपके चरणारविंदकी सेवा प्राप्त करके धन्य हो गयी है।

इतना कहकर गोपियां अदृश्य हो गयी। गोपियों ने यह कहा इसलिए लाडूबा को महाराज की महिमा समझ में आ गयी। महाराज से बड़ा कोई नहीं है। यह बात समझ में आ गयी।

२. एकदिन श्रीजी महाराज लाडूबा के दालान में भोजन हेतु पधारे। लाडुबा बडी श्रद्धा के साथ महाराज को भोजन परस के जिमा रही थीं।

महाराज भोजन करने लगे, उसी समय लाडूबाने कहा महाराज बहुत समय से एक संकल्प था आप की आज्ञा हो तो पूछे? महाराजने हाँ कह दिया। लाडूबाने कहा कृष्णावतार में आपको कौन नहवाता धुलाता था। यह सुनकर महाराज मंद-मंद हंसने लगे। और कहे कि इतने वर्षो से आपके घर हम रहते हैं फिरभी आप मेरी महिमा जान नही सकी, इसके पहले हम इस पृथ्वी पर आये नहीं है, और सर्व अवतारों का अवतारी हैं।

यह सुनकर लाडूबा महाराज के चरणों में गिर गयी और कहने लगी कि हे महाराज आपने हमारी आंख खोल दिया।

श्रीमद् भागवत दशमस्कन्ध तथा पंचम स्कन्ध को भक्ति शास्त्र एवं योग शास्त्र अवश्य कहा गया है लेकिन हमारी दृष्टि में तो महाराज से बडा कोई नहीं है। श्रीहरि के साथ पतिव्रता स्त्री की तरह भक्ति में निरन्तर ओतप्रोत रहना चाहिए। श्रीहरि के साथ लक्ष्मीजी तथा राधाजी की तरह अत्यंत शुद्ध पतिव्रता भक्ति रहे ऐसी गादीवाला के चरणों में प्रार्थना करिये।

•

डांगरवा की जतन बा

नानी बहन (बापूनगर)

दंढाव्य प्रांत के डांगरवा गाँव में वेणीदास पटेल नाम के एक भक्त रहते थे। जिनकी एक कन्या थी जिसका नाम था जतनबा। जतनबा महाराज में अपार भक्ति करती थी। जतनबा के प्रेम में बशी भूत होकर श्रीजी महाराज अपने परमहंसो तथा भक्तों को साथ लेकर डांगरवा पधारते थे। संयोगवश एकबार अपने पांच सौ परमहंसो तथा काठीदरबारों के साथ रतनबा के घर दो महीने रुके। उनके घर रुक कर नई-नई कथा करते करवाते और प्रतिदिन नई-नई रसोई बनवाते इस प्रकार करने से रतनबा की सम्पूर्ण कोठी अन्न की खाली होने को आ गयी लेकिन श्रीजी महाराज तो जाने का नाम ही नही ले रहे थे। श्रीजी महाराज की प्रत्येक क्रिया में कोई न कोई हेतु छुपा रहता है। कुछ लीला करने की इच्छा से महाराजने वेणीदास के मन में संकल्प विकल्प को समझगये और सभी को आज्ञा किये कि हे परमहंसो भक्तों आप लोग तैयार होजाओ और मेरी माणकी भी तैयार कर दो।

यह समाचार सुनने के साथ ही वेणीदास खूब प्रसन्न हुए कि श्रीजी महाराज अपने शिष्यों के साथ जाने को तैयार हो गये है कहीं मेरी रतनबा रोकन ले इसके लिए घरमें लेजाकर समझाते हैं। बाद में महाराज ने जतनबा को बुलाकर कहा कि तुम्हारे पिता ने तुमसे क्या कहा, जतनबा के मुंह से निकला कि हमारे पिताजी कहते थे कि देख श्रीजी महाराज जाने को कहते हो

तो उन्हें जाने नहीं देना । बगल में खडे वेणीदास यह सभी वात सुन लिये । लेकिन श्रीजी महाराज वेणीदास की तरफ दृष्टि करके कहने लगे हम तो सभी जानते है, वेणीदास ! आप क्या चिन्तन कर रहे हैं, हमारे विषय में या संतो के विषय में । हम जिसका खाते हैं उसकी कोठी खाली हो जाती है आओ चलो हम तुम्हारी कोठी दिखाते हैं । एक छड़ी हाथ में लेकर कोठियो का स्पर्श करते हैं और स्पर्श करते ही सारी कोठियां भर गयी ।

श्रीजी महाराज ने कहा वेणीदास पटेल ! हमें कोई वस्तु जब देता है तो हम उसे कई गुना अधिक करके देते हैं । अब आपकी यह कोठी कभी नहीं खाली होगी । वेणीदास पटेल शर्म से झुके हुए थे । बाद में वे श्रीहरि के चरणों में गिर गये । माफी मांगलने लगे । हमसे भूल हो गयी । आप माफ कर दीजिए । श्रीजी महाराज तो दया के सागर है, वे किसी के अवगुण को नहीं देखते । भगवान के मुख से आशीर्वाद निकला कि हम आपका कल्याण करेंगे और आपको अपने अक्षरधाम में लें जायेंगे । कितनी परमकृपालुता ?

श्रीजी महाराजने इस प्रसंग से यह शिक्षा दिया है कि भगवान के लिए जो कुछ खर्च किया जाय वह कभी कम नहीं होता इसलिए उसकी जितनी सेवा हो सके करनी ही चाहिए ।

•

स्त्रियों की सभा में भक्तिमाता का दर्शन

- राधाबहन रसिकभाई गोळविया
(सुरत)

एक समय श्रीजी महाराज का जया - ललिता (लाडुबा-जीवुबा) ने आग्रहपूर्वक अन्नकूट का उत्सव किया । विविध प्रकार के पक्वानो को बनवाया । श्रीजी महाराजने कहा कि अन्नकूट का पक्वान्न भगवान के सामने लगाओ, गोवर्धन का उत्सव करके अन्नकूट करो । महाराज ऐसा करने के बाद वासुदेव नारायण को साष्टांग प्रणाम करके आरती उतारकर वासुदेव नारायण के सामने विराजमान हुए । महाराज एक-एक वस्तुओं को देखकर खूब प्रसंशा किये ।

बाद में श्रीहरि की प्रतिमा को ललिता ने भोजन की थाल रखी तो महाराज प्रत्यक्ष आकर जि में और दोनों की खूब प्रसंशा किये कहने लगे कि ऐसा पकवान्न रसोईया भी नहीं बना सकता है ।

बाद में संतो की पंक्ति भोजन के लिए बैठी सभी को आदर से जिमाया । क्रम से हरि भक्त गृहस्थ, बहनोंने प्रसाद लिया । दोपहर में सभी के प्रसाद ग्रहण करने के बाद दालान में जीवुबा कथावार्ता कर रही थी उसी समय कोई अदृष्ट स्त्री वहाँ प्रवेश की उस समय सारावातावरण प्रकाश से भर गया । उसी समय जीऊबा, लाडुबा दोनो दौडती हुई महाराज के पास गयी और महाराज से सम्पूर्ण बात की तो महाराज ने कहा कि भक्तिमाता है, आप सभी भक्तिमाता से पूछो कि - क्या आप यहाँ रुकेंगी ?

बाद में लाडूबा, जीवुबा आकर भक्तिमाता को प्रणाम करके पूछी कि आप क्यों पधारी हैं ? तब भक्ति माता ने कहा कि आप सभी अन्नकूट बनाने में खूब परिश्रम की हैं । इसलिए हम दर्शन देने आयी हैं । बाद में बहनोने पूछा क्या आप यहाँ रुकेंगी ? तब भक्तिमाता ने कहा मैं तो पतिव्रता हूँ, आप लोग भी ऐसे धर्म का पालन करेंगी तो हम तथा हमारे पुत्र श्रीजी महाराज भी यहाँ अखंड रहेंगे ? ऐसा कहकर अन्तर्ध्यान हो गयी ।

धन्य हैं ऐसी हरिभक्तों की स्त्रिया जहाँ पर महाराज तथा भक्तिमाता दोनो प्रसन्न होकर अखंड रहने का वरदान प्राप्त किया । ऐसी हरिभक्त स्त्रियों के चरणो में हजारों प्रणाम ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००-रुपये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का १८४ वां पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं बांह में भरकर जिसे प्रतिष्ठित किये थे उन परकृपालु श्री नरनारायणदेव, श्री धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव का वार्षिक पाटोत्सव दि. २-३-०६ फाल्गुन शुक्ल तृतीया के शुभ दिन धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ था। मंगल प्रभात मं मंगला आलती के बाद यजमान परिवार द्वारा ठाकुरजी का मंगल पूजन विद्वान ब्राह्मणों द्वारा सम्पन्न करवाया गया था। इसके बाद मंगल मूहूर्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा वडताल से पधारे हुए आचार्य प.पू.ध.धु. राकेशप्रदासजी महाराजश्री अपने हाथों से श्री नरनारायणआदि देवों का वेद मंत्रोच्चार के साथ पंचामृत महा अभिषेक तथा विविध औषधियों सहित केशर जल से स्नान कराकर षोडशोपचार पूजन किया था। जिसका हजारों हरिभक्तों ने दिव्य दर्शन का लाभ लिया था। उस समय १८४ वर्ष पूर्व की दिव्यता का मानो दर्शन हो रहा था। श्रृंगार आरती के बाद प्रसादी के सभा मंडप में देश विदेश से पधारे हुए पूजनीय संत एवं हजारों हरिभक्त विशाल सभा में अहमदाबाद, वडताल दोनो देशों के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री सभा में विराजमान हुए उस समय सभा की शोभा तथा भक्तों के आनन्द की लहर दृश्यमान हो रही थी। सभा में यजमान प.भ. कस्तूरचन्द पोपटलाल झिन्झुवाडीया सोनी परिवार के साथ दोनो देश के प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री का भाव पूर्वक पूजन करके दिव्य लाभ प्राप्त किया था। दोनों देश के संतो को धौत वस्त्र ओढाया गया था। सभा में अहमदाबाद देश तथा वडताल देश के विद्वान संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया था। इसके बाद दोनो देश के आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। सम्पूर्ण सभा का संचालन पूज्य महंत स्वमी ने किया था। बाद में देंवो को अन्नकूट का भोग लगाया गया था। जिस की आरती दोनो देश के आचार्य ने करके दर्शनार्थ मंदिर को खोल दिया था। समस्त धर्मकुल परिवार तथा दोनो देश के संत बडी संख्या में पधारे हुए थे। यजमान परिवार की तरफ से सुन्दर महाप्रसाद का वितरण किया गया था। पाटोत्सव के आयोजन में पू. महंत स्वामी की आज्ञा से को. धर्मप्रकाश स्वामी, शा. गोलोकविहारी स्वामी, को. आनंदप्रसाददासजी, सत्यप्रकाश स्वामी, विश्ववल्लभ स्वामी, राजेन्द्रप्रसाद स्वामी, अन्नकूट व्यवस्था में पू. उत्तमप्रिय स्वामी, ब्रह्मविहारी स्वामी, सत्यस्वरूप स्वामी इत्यादि संतो खूब परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाये थे।

- सत्यप्रकाश स्वामी

श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में शिक्षापत्री जयंति संपन्न

सर्वोपरि सर्वावतारी भरत खंड के अधिष्ठाता देवता श्री नरनारायणदेव के दिव्य सांनिध्य में भगवान श्री स्वामिनारायण ने सर्वजीव हितावह सर्वोपरि शिक्षापत्री सं. १८८२ माद्य शुक्ल पंचमी के दिन लिखी थी।

मंदिर के प्रसादी के सभा मंडप में पू. महंत स्वा. शा. निर्गुणदासजी तथा संत हरिभक्तों की विशाल सभा में स.गु.पु. घनश्यामचरणदासजी ने शिक्षापत्री श्लोक का संस्कृत-गुजराती वांचन किया था। इस प्रसंग का वातावरण अत्यन्त आनन्द दायक था। श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपों ने मूली तथा भुज एक ही साथ वसंत पंमची केउत्सव का सभी को लाभ दिया था।

- कोठारी धर्मप्रकाशदास

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर (में दशाब्दी) पाटोत्सव सम्पन्न

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव जहाँ तप किये थे उस दिव्य महान तीर्थभूमि नारायणघाट के श्री स्वामिनारायण मंदिर को १० वर्ष पूर्ण होने पर प.पू..धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से तथा मंदिर निर्माता पू. गवैया स्वामी की प्रेरणा से दशाब्दी पाटोत्सव मनाया गया था। माघ वद-५ को ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से वेदविधि पुरस्सर सम्पन्न किया गया था। हरिभक्त अधिक संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिये थे। इस प्रसंग पर महन्त स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी ने विदुरनीति पारायण ता. १५-२-०६ से १९-२-०६ तक किये थे। हरिभक्त आनन्द के साथ कथा का श्रवण किये थे। पाटोत्सव के यजमान अ.नि.प.भ. साकणचंद उमेदराय पटेल परिवार पारायण यजमान अ.नि.प.भ. छगनलाल रणछोडदास झाला परिवार तथा सुवर्ण कलश तथा अंतिम दिन रसोई के यजमान अ.नि.प.भ. नाथजीभाई इच्छाराम शुक्ल शिष्य मंडल अहमदाबाद तथा अ.नि.प.भ. विठ्ठलभाई सोमचन्द शाह (वकील) परिवार थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री श्री धर्मवंशी आचार्य परिवार का दर्शन आशीर्वाद प्राप्त कर हरिभक्त धन्य हो गये।

-साधु पूर्णप्रकाशदास

सहजानन्द गुरुकुल असारवा में शाकोत्सव तथा वाली संमेलन संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संचालित श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की मालिकी के इस गुरुकुल में ता. २५-२-०५ के दिन श्री सहजांद गुरुकुल असारवा के पटांगण में अभिभावक संमेलन तथा ज्ञानोत्सव खूब उत्साह से संपन्न हुआ।

प.पू. बडे महाराजश्री अपने ही बाल

क्रीडांगण की भूमि में पधारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

प्रात: ९-०० बजे से सांय ४-०० बजे तक गुरुकुल के सि.के.जी., जू.के.जी के उपरांत कक्षा १ से ७ तक के प्राथमिक एवं ८ से १० तक माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में प.पू. बडे महाराजश्री एवं पूज्य संत एवं अभिभावकों के समक्ष विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम-आसन पिरामिड, रास, नाटक, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम करके सभी का आशीर्वाद प्राप्त किये थे । अभिभावकों को गुरुकुल की प्रवृत्ति के विषय में जानकारी दी गयी थी । दोपहर में ठाकुरजी का महाप्रसाद सभी को दिया गया था । संचालक श्री शा.स्वामी निर्गुणदासजी की आज्ञा से गुरुकुल परिवार तथा शिक्षक गण सुन्दर आयोजन करके सफलता प्राप्त किये थे । *- रमेश पटेल*

एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास शाकोत्सव तथा प्रथम पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंहत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से सम्पूर्ण धनुर्मास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि एवं कथा वार्ता का आयोजन किया गया था । बापूनगर के हरिभक्त सम्पूर्ण परिवार के साथ भाग लिये थे । वहनों के मंदिर के लाभार्थ झोली मांगी गयी थी ।

ता. ८-२-०६ के दिन प्रात: ७-३० से दोपहर को १२ बजे तक प.भ. वासुदेवभाई गज्जर की माताजी के स्मरणार्थ उनके परिवार की तरफ से महामंत्र धुनि तथा प्रसाद का आयोजन किया गया था ।

ता. २२-१-०६ के दिन भव्य शाकोत्सव प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से अमहदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी के शुभ हाथों से सम्पन्न किया गया था । प्रत्येक धाम से संत तथा हरिभक्त आये हुए थे ।

इस मंदिर में विराजमान बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का प्रथम पाटोत्सव ता. ५-२-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न किया गया था ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में समूह महापूजा, त्रिदिवसीय श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण पू. महंत शा.स्वा निर्गुदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । बापूनगर तथा अगल बगल के विस्तार से हजारो हरिभक्तों ने लाभ लिया था । प.पू. महाराजश्री के वरद हाथों से कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । प्रत्येक धाम से संत पधारे हुए थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. हरजीभाई वालजीभाई पाणिया थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री का परिवार ने आशीर्वाद प्राप्त किया था । इस उत्सव से हरिभक्तों को खूब प्रेरणा मिली थी । *- गोरधनभाई सीतापरा*

गामडीगाव में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे

स.गु. आनंदानंद स्वामी के प्रसादी के तीर्थस्थल गामडीगाँव में प्रतिवर्ष साम्प्रदायिक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है । सर्वोपरि श्रीहरि ने इस गाँव के प्रत्येक घर को अपने चरणों के रज से पूत किया है । इस गाँव को स्वामी आनंदानंद का दिव्य आशीर्वाद मिला हुआ है । भगवान के पास इसगाँव में मरने वालों के लिये यम लेने न आवें भगवान स्वयं आवे ऐसी प्रार्थना की थी । यहाँ का स्वामिनारायण मंदिर स.गु. आनंदानंद स्वामीने बनवाकर मोक्ष का द्वार खुल्ला कर दिया था । इस गाँव में हनुमानजी तथा विश्वेश्वर महादेव का बड़ा ही चमत्कारिक मंदिर है । यह गाँव जेतलपुर के अन्तर्गत आता है । यहाँ का सत्संग श्री नरनारायणदेव की निष्ठावाला है । परम पूज्य धर्मकुल भूषण आचार्य महाराजश्री का इस गाँव पर खूब आशीर्वाद है ।

ता. २५-१-०६ के दिन श्रीजी महाराज के प्रसादी की वाराही माताजी के मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प्राण प्रतिष्ठा का लाभ दिया था । गाँव के हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का अपूर्व स्वागत किया था । जेतलपुर मंदिर के पी.पी. स्वामी तथा महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से धूमधामपूर्वक सम्पन्न हुआ । जीर्णोद्धार समिति के प्रमुखश्री योगेशभाई रमणभाई पटेल ने स्वागत प्रवचन किया ।

इस प्रसंग में मुख्यदाता श्री अरविन्दभाई के पुत्र श्री मनोजभाई ने प.पू. महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया । प.पू. महाराजश्री श्री रमणभाई जादाभाई के यहाँ भोजन प्रसाद लेकर श्री अरविंदभाई भामाभाई के यहाँ पदार्पण करके वापस अहमदाबाद आये ।

-विश्वप्रकाश स्वामी, जेतलपुर

चलोडा (जीतुबा) (धोलका देश)

जीतुबा के चलोडा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री मुरली मनोहर श्री हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा पू. महाराजश्री की आज्ञा से सम्पूर्ण धनुर्मास में श्रीहरि के महामंत्र नाम की धुनि चलती रही । गाँव के सभी आबाल नरनारी प्रात: धुनि में उपस्थित होकर धन्यता का अनुभव करते थे ।

- जयंतीभाई पटेल

शिरोही श्री स्वामिनारायण मंदिर

राजस्थान के शिरोही श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा साधु अक्षरप्रकाशदास की प्रेरणा से धनुर्मास पर्यन्त धुनि का लाभ सभी हरि भक्तों ने लिया ।

- छोगालाल सोनी

पोर (जि. गांधीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री मद् भागवत पारायण कथा

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से अ.नि. शा.स्वा. नारायणप्रसाददासजी तथा अ.नि. स्वा. त्रिकमचरणदास, अ.नि. गोविंदप्रसाददासजी तथा पार्षद मोती

भगत के स्मरणार्थ उन्ही के शिष्य स्वा. धर्मजीवनदासजी, को. पार्षद दिगम्बर के साथ पोर गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २३-१-०६ से २९-१-०६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. हरिकृष्णदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। संहिता पाठ के वक्ता स्वा. हरिस्वरूपदासजी, शा. सत्यस्वरूपदासजी थे। इस प्रसंग पर वडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवाला पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का अलौकिक सुख भक्तो को दिया। कथा की पूर्णाहुति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने करके स्वामी धर्मजीवनदासजी पर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, स.गु. देव स्वामी (स्कीम कमेटी सभ्य), स्वामी जयप्रकाशदासजी, को. दिगम्बर भगत, स्वा. हरिचरणदास इत्यादि संत सेवा में भाग लिये थे। छोटे पी.पी. स्वामी संभा संचालन किये थे। इस प्रसंग पर विविध धामों से संत पधारे थे। अगल बगल के गाँव झुंडाल, धमासणा, उनावा, चांदखेडा, अंबापुर, वावोल, कुडासडा इत्यादि गाँवो से भक्त आये हुए थे।

- स्वा. बालस्वरूपदास, चिलोडा

श्रीहरि के प्रसादी के गाँव में भक्त चिंतामणी पारायण

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ गाँव में अ.नि. रुक्मिणीबहन रेवाभाई के स्मरणार्थ ता. १७-१२-०५ से १९-१२-०५ तक त्रिदिवसात्मक भक्त चिन्तामणी का पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदास के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर प.भ. रेवाभाई रणछोडदास पटेल की जीवन चर्चा भी रखी गयी थी। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर यजमान परिवार तथा गाँव के समस्त हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग का आयोजन प.भ. रेवभाई के पुत्र कानजीभाई, रमणभाई, जयंतीभाई, रमेशभाई ने किया था। कथा प्रसंग में स्वामी हरिकृष्णदासजी (पूर्व छपैया महंत), पू.ब्र. राजेश्वरानंदजी, स्वा. देवकृष्णदासजी (स्कीम कमेटी सभ्य), स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारकर प्रसंग की शोभा बढाये थे।

- साधु जयप्रकाशदास

धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास संपन्न

सर्वोपरि श्री मुरली मनोहर हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं लालजी महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर के सुन्दर वातावरण में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि सम्पूर्ण मास पर्यन्त संत हरिभक्त करते रहे जिससे सारावातावरण आनन्ददायक होगया था। जिस का लाभ लेने वाले हरिभक्त धन्य हो गये थे। महंत स्वा. जगत्प्रकाशदासजी तथा विष्णुप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा कार्य किया था। *- शा. पूर्णप्रकाशदास*

श्री प्रभु हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा

प्रसादी के दिव्य मास्तिनन्दन के अलौकिक सांनिध्य में तथा श्रीहरि के धर्मवंशी परिवार के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण साधु पूर्णप्रकाशदासजीने किया था। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शाकोत्सव का दिव्य लाभ देकर सभी को प्रसन्न किया था। जिस में हजारों हरिभक्त कृतार्थ होगये थे।

- साधु विजयप्रकाशदास

गोजारिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वडनगर के स्वामी सत्संकल्प की प्रेरणा से तथा श्री नरनारायण युवक मंडल तथा हरिभक्तो के साथ सहकार से ता. १८-१२-०५ के दिन भाव्य शाकोत्सव मनाया गया था। जिस में मेउ, समौ, सोजा, बालवा, विसनगर आदि गाँवो के हरिभक्तों ने लाभ लिया था। मुख्य यजमान श्री घनश्यामभाई थे। स्वा. आनन्दजीवनदासजी तथा स्वामी उत्तमप्रियदाजी ने धर्मकुल माहात्म्य सविस्तार समझाया था।

- श्री नरनारायण युवक मंडल

वहेलाल मंदिर में शाकोत्सव सम्पन्न

श्रीजी महाराज के प्रसादी के तीर्थधाम वहेलाल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १८-१-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें दर्शन के लिये हजारों हरिभक्तों ने दिव्यता का आनन्द लिया। नारायणघाट मंदिर के घनश्यामप्रकाशदासजीने शाकोत्सव की महिमा तथा धर्मकुल का माहात्म्य सभी को समझाया। *- श्री नरनारायण युवक मंडल मंडल, वहेलाल*

सोजा श्री स्वामिनारायण मंदिर शताब्दी महोत्सव

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी हरिचरणदासजी तथा स्वामी वासुदेवचरणदासजी एवं शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से सोजा में श्री स्वामिनारायण मंदिर का शताब्दी महोत्सव तथा बहनों के मंदिर का रजत जयंती महोत्सव, प्रसादी के छत्री जिर्णोध्दार, हनुमानजी महाराज के नूतन मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. ५-२-०६ सं. ११-२-०६ तक श्री रामायण, श्री मास्तियज्ञ, ठाकुरजीका अभिषेक, अन्नकूट प्रसाद, व्यसन मुक्ति अभियान रक्तदान शिबिर, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। रामायण वक्ता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, पु. हरिस्वरूपदासजी थे। इस प्रसंग पर पोथी यात्रा, श्री रामजन्मोत्सव, श्री हनुमान दादाकी नगरयात्रा, प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी शोभायात्रा इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ था।

गाँव के श्रद्धालु हरिभक्तों ने प्रसंग के यजमान बनकर महालाभ लिये थे । पूर्णाहुति के दिन ११-२-०६ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर कथा की पूर्णाहुति एवं मंदिर में ठाकुरजी की आरती, श्री हनुमानजीकी प्राण प्रतिष्ठा तथा प्रसादी की छत्री में चरणारविंद प्रतिष्ठित करके आरती उतारे थे । इस प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । बहनों को दर्शन आशीर्वाद देने हेतु प.पू. अ.सौ. गादीवाला भी पधारी थीं । बड़े महाराजश्री इस कार्यक्रम में पधारकर गाँव के लोगों को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये । जगन्नाथ मंदिर के महंत पू. रामेश्वरदासजी पधारकर प्रसंग की सोभा बढाये थे । सभा संचालन पी.पी. स्वामीने किया था । अन्य सहभागी संत ब्र. पू. राजेश्वरानन्दजी, पू. स्वामी देवप्रकाशदासजी, स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी, को. दिगम्बर भगत, सूर्यप्रकाशदासजी संत-पार्षद मंडल थे । सतत सात दिन तक, गाँव के तथा अगल बगल के गाँव के भक्त लोग कथा श्रवण कर तथा देव आचार्य, संत का दर्शन कर धन्यता का अनुभव किये थे ।

- ब्र. पू. राजेश्वराननंदजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एव प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी वल्लभदासजी (माणसा) एवं छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से बापुपुरा में भाईयों तथा बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में २५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर रजत जयंती महोत्सव तथा उसी के उपलक्ष्य में ता. ११-२-०६ से ता. १५-२-०६ तक श्रीमद् सत्संगि भूषण पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदास के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । इस के साथ अन्य कार्यक्रम, श्री विष्णुयाग, सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़े सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ . समस्त धर्म कुल परिवार पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का लाभ दिया था । ता. १५-२-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे उस समय भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी । प.पू. महाराजश्रीने दोनो मंदिर के ठाकुरजी की आरती उतारकर यज्ञ की पूर्णाहुति तथा कथा की पूर्णाहुति किये थे । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार तथा गाँव के भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ब्र. पू. राजेश्वरानन्दजी, स्वामी देवप्रकाशदासजी, स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी तथा बाल स्वरूप स्वामी विविध सेवा में सहभागी हुए थे ।

- जे. पी. स्वामी

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवावाडज

ता. १२-१-०६ के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जिसके यजमान प.भ. भीखाभाई गोविन्दभाई परमार तथा प.भ. वालजीभाई धरमशीभाई गांगाणी थे ।

प्रासंगिक सभा में स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी, स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी, स्वा. सत्यप्रकाशदासने शाकोत्सव की उत्तम महिमा समझायी थी । समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । वसंत पंचमी के दिन भी शिक्षापत्री का पठन आदि का कार्यक्रम संपन्न हुआ था ।

- शंभुजी एच. पटेल

जीवराजपार्क मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ४-२-०६ के दिन सायंकाल ५-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से भव्य शोत्सव सम्पन्न हुआ था । इस प्रसंग पर सेटेलाइट, वासणा, पालडी विस्तार के हजारों हरिभक्त शाकोत्सव तथा महाराजश्री के दर्शन का लाभ लिये थे ।

- भरतभाई ठक्कर

हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत शा.स्वा. आनन्दजीवनदास की प्रेरणा से हिंमतनगर से टोरडा मंदिर ६० कि.मि. तक संत हरिभक्तों ने पदयात्रा का आयोजन किया थआ । श्री स्वामिनारायण धुनि करते प्रथम दिन घूणेटा जलाराम मंदिर में प.भ. अमीचंदभाई प्रजापति की तरफ से तथा दूसरे दिन प.भ. रमणभी पटेल की तरफ से टोरडा मदिर में ठाकुरजी को भोग तथा संतो को रसोई दी गयी थी । टोरडा के महंत स्वामीने पदयात्रियों का सुंदर स्वागत किया था ।

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली मे वसंत पंचमी के दिन उत्सव संपन्न

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज आदि स्वरूपों का पाटोत्सव महाअभिषेक माघ शुक्ल पंचमी के शुभ प्रभात में श्रीहरि के ७वें एवं आठवें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से धूमधामपूर्वक संपन्न किया गया था । इस प्रसंग का दर्शन करने के लिए झालावाड हालार एवं सुरेन्द्रनगर जिले के मूली देश के प्रत्येक गाँव के हरिभक्त पधारे हुए थे । श्रीराधाकृष्णदेव के पुजारी स्वा. जयप्रकाशदासजी तथा संत मंडल ने अभिषेक प्रसंग पर ठाकुरजी एवं धर्मवंशी की सुन्दर सेवा करके प्रसन्नता प्राप्त किये थे ।

प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो मूली मंदिर देव आचार्य एवं स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के माहात्म्य को समझाकर हरिभक्तों को प्रसन्न किया था । अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आसीर्वाद दिया था ।

दोपहर १२-०० बजे मंदिर के विशाल प्रांगण में श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपने

संत हरिभक्तों के साथ रंग खेल कर भगवान स्वामिनारायण के समय का स्मरण करवाया था । जिसे सभी यावज्जीवन याद बनाये रखेंगे । मूली के रंगोत्सव का लाभ भाग्यशालीजन को ही मिलता है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री रंगोत्सव का लाभ दे कर पश्चात् प्रसाद लेकर स्वस्थान पधारे थे । यहाँ के महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसादासजी के मार्गदर्शन से कोठारी जे.पी. स्वामी, भानु स्वामी, आदि संतो ने सुंदर सेवा की थी ।

- शा.सूर्यप्रकाशदास, नारायणघाट

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में शिक्षापत्री जयंती उत्सव

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा. धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से वसंत पंचमी के दिन शशिक्षापत्री का समूह वाचन किया गया था । बाद में सभी ने शिक्षापत्री पूजन किया था । शाकोत्सव प्रसंग धूमधाम से मनाया गया था । ठाकुरजी को पूजारी स्वामीने अद्‌भुत अलंकृत किया था । उत्सव मंडल के सभ्य लोगों ने जिस में श्री राजुभाई, वेदान्तभाई, श्री नरेशभाई, श्री नाना भगत, श्री ठाकोरभाई, मोटा भगत, श्री विष्णुभाई, श्री धीरूभाई इत्यादि हरिभक्तों ने कीर्तन भजन समूह में किया था । सभा में पूजारी स्वामी तथा घनश्याम स्वामीने शाकोत्सव की महिमा समझायी थी । प.भ. जगदीशभाई ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में प्रत्येक हरिभक्त सेवा करें ऐसा निवेदन किया था । महंत स्वामी ने यजमानों का स्वागत किया था । प्रत्येक हरिभक्तों ने इस कार्यक्रम में सेवा करके श्रीहरि को प्रसन्न किया था । प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति सुन्दर चलती है ।

- पूजारी स्वामी

लोंस एंजलस (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी सम्पन्न

लोंस एंजलस (I.S.S.O.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से वसंत पंचमी के दिन सभा में महंत स्वामी केशवचरणदासजी तथा घनश्याम स्वामीने हरिभक्तों के साथ शिक्षापत्री का सामूहिक वाचन करके शिक्षापत्री का माहात्म्य समझाया था ।

१२ फरवरी को भव्य शाकोत्सव करके ठाकुरजी को शाक का वघार करते हुए दिखाया गया था । सभा में संतो द्वारा कथा वार्ता तथा शाकोत्सव की महिमा तथा महामंत्र धुनि करके ठाकुरजीकी आरती करके प्रसाद वितरण किया गया था । सैंकडो हरिभक्तों ने सेवा का सुन्दर लाभ लिया था । सभी को दर्शन का उत्तम सुख मिला । धर्मवंशी की कृपा से इस प्रकार का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है ।

- नटुभाई पटेल

वोशिंग्टन (डी.सी. (I.S.S.O.) चेप्टर)

प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से प्रतिमास नियमित सत्संग सभा होती है । २८ जनवरी शनिवार की साम २-३० बजे सभा में कथावार्ता, कीर्तन-भक्ति, नित्य-नियम, ठाकुरजी की थाल-आरती की गयी थी । हरिभक्तों ने बडी संख्या में उपस्थित होकर सभा का लाभ लिया था ।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O. ओस्ट्रेडलिया चेप्टर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी ४-१२-०५ के दिन प.भ. अंजलेशभाई पटेल की तरफ से सत्संग सभा हुई थी । प्रति दूसरे एवं चौथे रविवार को श्री स्वामिनारायण सीरीयल सीडी सभा में बताई जाती है । ता. १८-१२-०५ को श्री व्रजमास्ने वचनामृत का सभा में विवेचन किया था । ता. २-१-०६ के दिन मंदिर के प्रथम पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भुज मंदिर के संतो ने ठाकुरजीकी एवं श्रीहरिकृष्ण महाराज की केशर मिश्रित जल से अभिषेक करके पाटोत्सव किया था । प.भ. विरेनभाई देसाई पाटोत्सव के यजमान थे । श्री अमृतदादा ने श्री स्वामनारायण भगवान की महिमा समझायी थी । हरि भक्त बडी संख्या में दर्शन का लाभ लिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा दृष्टि से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

- तेजस वी. पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

असलाली : श्री स्वामिनारायण मंदिर असलाली के पुजारी प.भ. जसुभाई पटेल के पुत्र प.भ. हर्षदभाई ता. २७-१-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : मूल अंतर सुबा गाँव की सरोज बहन रमणलाल परीख ता. १६-१-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई हैं ।

अहमदाबाद (बापूनगर) : प.भ. फुलाभाई वल्लभभाई पाघडल ता. २६-१-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुऐ है ।





कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण प्रसंग पर वक्ता महोदय को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



भक्तिनगर (ता. हळवद) गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



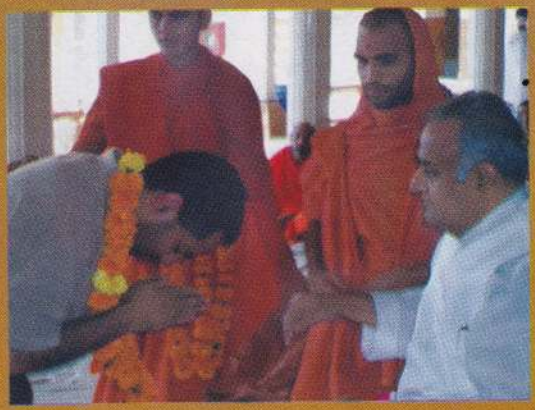
महेसाणा मंदिर में गुरुमंत्र के बाद हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



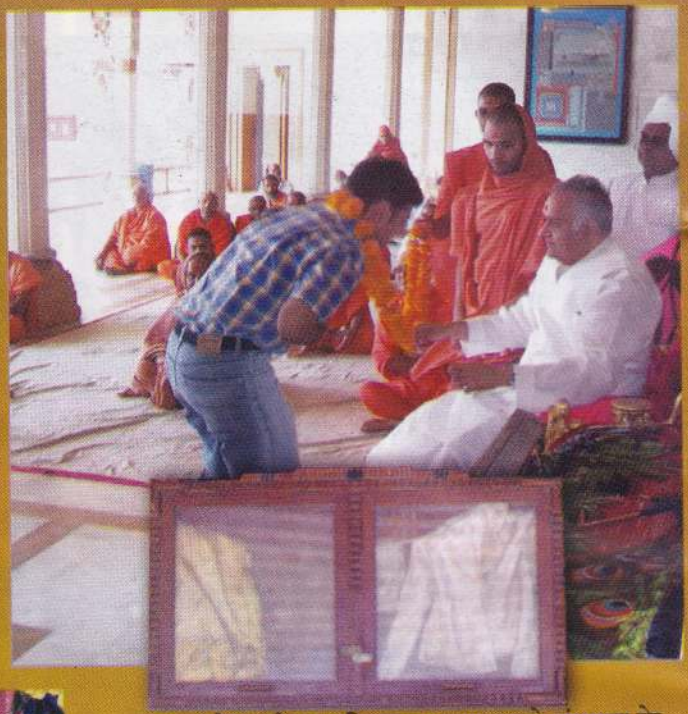
पोर गाँव में पारायण प्रसंग पर भव्य शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संत समुदाय ।



पोर में कथा श्रवण में मग्न हरिभक्त ।

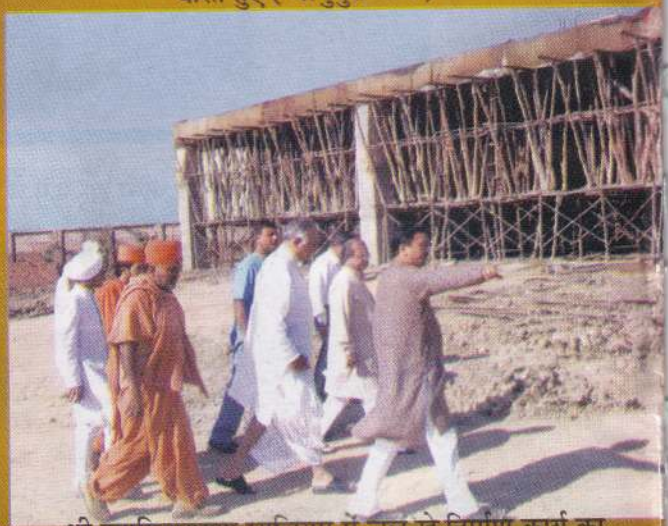


श्री स्वामिनारायण म्युजियम जिस हेतु से बन रहा है, वे दिव्यातिदीव्य अलौकिक श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुयें अ.नि. नवीनचंद्र शेठ की परम्परा के अ.नि. हरीशभाई शेठ के पुत्र प.भ. प्रणव (गोपाल) तथा प.भ. दर्शन प.पू. महाराजश्री को बड़ी श्रद्धा के साथ अर्पण करते हुए ।



गुजरात के मूर्धन्य साहित्यकार तथा अपने संप्रदाय के सत्संगी श्री श्री रघुवीर चौधरी श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए प.पू. बडे महाराजश्री को चेक अर्पण करते हुए (बापुपुरा गाँव)





श्री स्वामिनारायण म्युजियम में चल रहे निर्माण कार्य का प.पू. बडे महाराजश्री के साथ बडी सूक्ष्मता से निरीक्षण करते हुए गुजरात सरकार के मंत्री श्री भूपेन्द्रभाई चुडासमा ।



पोर (गांधीनगर) गाँव में पारायण प्रसंग पर गुरुपरम्परा से प्राप्त प्रसादी के वस्त्र-चरणारविन्द श्री स्वामिनारायण म्युजियम के लिए प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री को अर्पण करते हुए साधु धर्मजीवनदास ।

Praful Kharsani